तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

आज़ादी का अमृत महोत्सव

काव्य मंजरी
Kavya Manjari

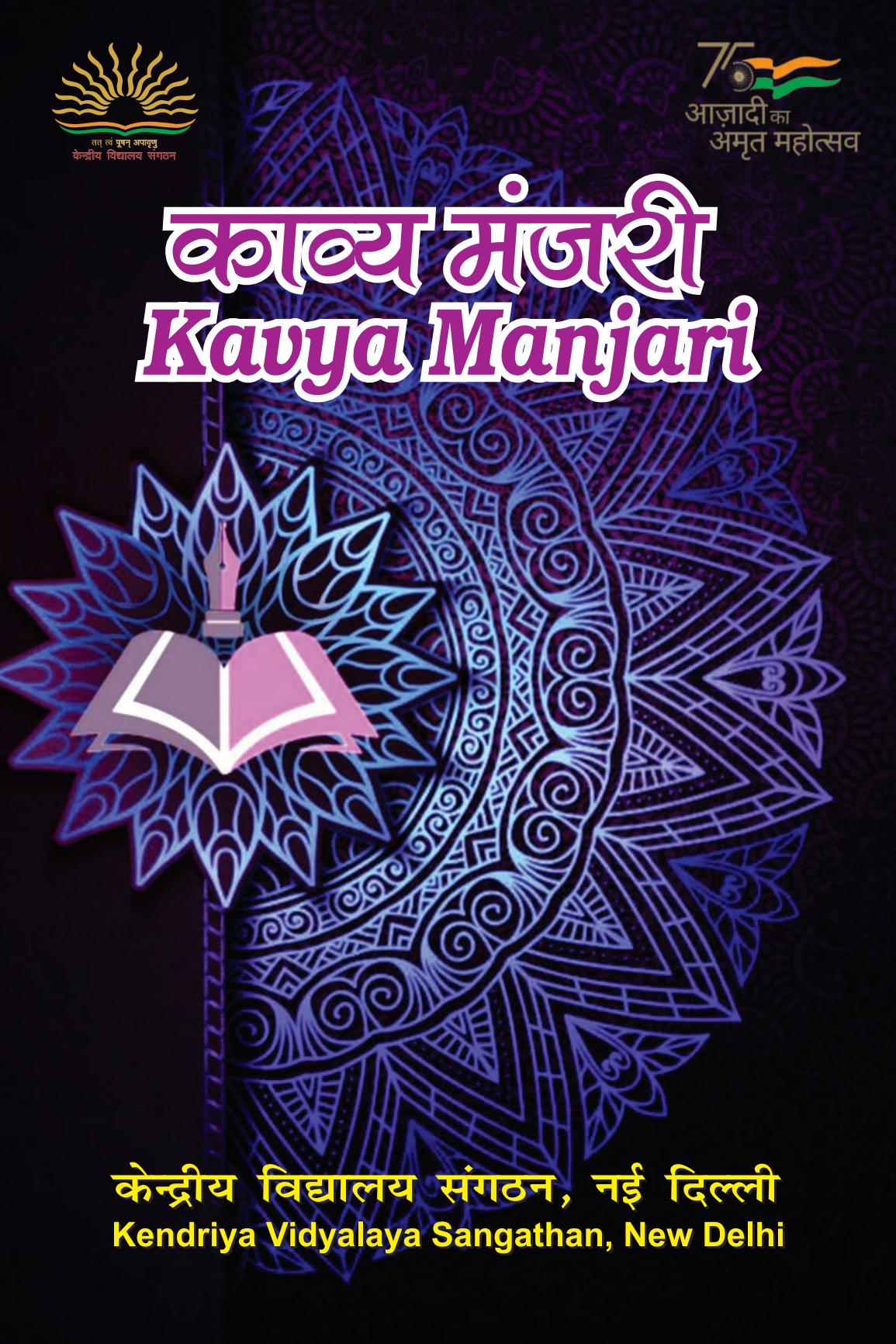

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली
Kendriya Vidyalaya Sangathan, New Delhi

काव्य मंजरी

भाग–15

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली

© केन्द्रीय विद्यालय संगठन

काव्य मंजरी, भाग–15

स्थापना दिवस-2021 के उपलक्ष्य में प्रकाशित केन्द्रीय विद्यालय शिक्षकों एवं कर्मचारियों द्वारा रचित कविताओं का संकलन

ई–पुस्तक

मार्गदर्शन : **श्रीमती निधि पाण्डे**
आयुक्त, के.वि.सं (मु.)
संपादक : **श्री एन. आर. मुरली**
संयुक्त आयुक्त (प्रशिक्षण)
सह-संपादक : **श्री रनवीर सिंह**
उपायुक्त (शैक्षिक)
संपादकीय प्रभारी : **श्री सचिन राठौर**
सहायक संपादक, के.वि.सं. (मु)
आवरण पृष्ठ : **श्री प्रमोद कुमार रजक**
टीजीटी (कला), केन्द्रीय विद्यालय
क्रं 1, कंकड़ बाग, पटना

डॉ. ई. प्रभाकर, संयुक्त आयुक्त (प्रशासक), केन्द्रीय विद्यालय संगठन, मुख्यालय, नई दिल्ली, द्वारा प्रकाशित।

मुद्रक : **वीपीएस इंजीनियरिंग इम्पैक्स प्रा. लि.**
बी–4, सेक्टर 60, नोएडा, उत्तर प्रदेश–201301

दो शब्द

केन्द्रीय विद्यालय संगठन की वार्षिक काव्य पुस्तक 'काव्य मंजरी' का 15वां अंक पाठकों को समर्पित करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। हमारे शिक्षकों एवं अन्य कार्मिकों की कोमल भावनाओं को प्रतिबिंबित करता यह संकलन हम सब के मन को छुएगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

केन्द्रीय विद्यालय संगठन के सभी 25 संभागों, पांच आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों और मुख्यालय से इस अंक के लिए बहुत बड़ी संख्या में रचनाएं प्राप्त हुईं। चयन समिति द्वारा अंतिम रूप से जिन रचयिताओं की कविताओं का चयन किया गया, उन सभी को हार्दिक बधाई।

अच्छा साहित्य सदैव समाज को दिशा देता आया है। कोरोना आपदाकाल में रचा गया साहित्य भी आने वाली पीढ़ी को आज की वस्तुस्थिति और चुनौतियों से न केवल अवगत कराएगा बल्कि उन्हें आपदाओं के प्रति सजग भी करता रहेगा।

डिजिटल भारत की संकल्पना के अनुरूप और कोविड आपदा की परिस्थितियों को दृष्टिगत रखते हुए, इस बार यह पुस्तक ई–बुक के रूप में सभी पाठकों के लिए उपलब्ध रहेगी। मेरा विश्वास है कि हमारे शिक्षक एवं अन्य कार्मिक इसी प्रकार अपनी सृजनशीलता को अनवरत जारी रखेंगे।

पुनः एक बार सभी रचनाकारों की प्रशस्ति करते हुए, पुस्तक के संपादक मंडल एवं चयन समिति के सदस्यों को हार्दिक बधाई।

अनंत शुभकामनाओं सहित,

निधि पाण्डे

(निधि पाण्डे)
आयुक्त

कविताओं की सूची

क्र	शीर्षक	रचयिता का नाम	पृ.सं.
1	मैं तो खुद ही कविता हूँ	प्रीतीश डबराल	1
2	संवेदना	टी. मालती	2
3	डर से जीतना होगा	सीमा शर्मा	4
4	माँ तुझे क्या बतलाऊँ	प्रवीण कुमार	5
5	मेरे देश का पहला प्यार है हिंदी	अमन कुमार	7
6	इम्तिहानों का दौर	दिलीप कुमार शर्मा	8
7	हां आगे बढ़ना होगा	मोनिका	9
8	मैं टुकड़ों में बिखरे हुए हिंदुस्तान सा हूँ	मनीष कुमार मुण्डोतिया	10
9	स्वयं से साक्षात्कार	डॉ. गौरव शर्मा	11
10	एक गीत केन्द्रीय विद्यालय संगठन के लिए	आशीष जैन	12
11	अरुणोदय	मुकेश	13
12	तत्–त्वम्–असि	पी सी खुल्बे	14
13	विद्यालय की बगिया	गोविन्द सिंह मेहता	16
14	गुलमोहर	फूलचंद्र विश्वकर्मा	17
15	पलायन	ब्रजेश चौधरी	18
16	मेरी कविता	दिनेश कुंवर पटेल	19
17	मेरे सपने कुछ बड़े नहीं	प्रदीप कुमार	20
18	नादान परिंदे	मुद्रित पाण्डेय	21
19	सच्चाई का जीवन	नन्द किशोर छंगाणी	22
20	पुरुषार्थ	सुरेंद्र कुमार पाठक	23
21	मत होना कभी निराश	ओमप्रकाश चंद्राकर	24
22	मानव को अंतिम चेतावनी	रवि कुमार	25
23	बादल से कब डरा है सूरज	संजय कुमार जैन	26
24	जीवन पथ	प्रकाश चन्द्र तेवाड़ी	27
25	कदम आगे रख तो सही	शिव लाल सिंह	28

क्र	शीर्षक	रचयिता का नाम	पृ.सं.
26	देहाती दुनिया	सोहन लाल	29
27	अब के बरस इस सावन में	देवेंद्र कुमार देरान	30
28	उड़ान	अदिता सक्सेना	31
29	एक मुसाफिर ऐसा	संजय कुमार	32
30	कलम	पवन कुमार	33
31	दीप जलाना होगा	डॉ. योगेश कुमार	34
32	पर्यावरण बचाएं	अरविन्द कुमार	35
33	साँस तो लेने दो मुझे	प्रवीन कुमार पाठक	36
34	स्वयं	सुनीता	37
35	ओस के घने कुहासे में	योगेश कुमार बारेठ	39
36	घर क्या है	नीरज सिंह मीणा	40
37	मैं स्त्री हूँ!	तारा चंद सैनी	41
38	अप्रासंगिक	नेत्र सिंह	42
39	कृतज्ञता	डॉ. स्नेह गौर	44
40	साधना कठिन हो तो	डॉ. शुभ नारायण सिंह	45
41	क्योंकि तुम रोशनी हो	भीम कुमार	46
42	गौरव गाथा	विवेक नीमा	47
43	जन–गण–मन फिर गाएंगे	अयोध्या प्रसाद द्विवेदी	48
44	जल सा जीवन	राम निवास यादव	49
45	तो कुछ और बात होती	अनुराधा शर्मा	50
46	ना संघर्ष से तुम घबराना	राहुल देव	51
47	तेरे सृजन के आगे	निर्मला बुडानिया	52
48	मेरी असफलता	प्रियंका शर्मा	53
49	बढ़ती जनसंख्या	कृष्णावती कुमारी	54
50	बहार	अर्चना नेमा	55
51	बिन पानी सब सून	पंकज कुमार	56

क्र	शीर्षक	रचयिता का नाम	पृ.सं.
52	मत हार तू हिम्मत रख	शिम्पी गुप्ता	57
53	मानवता के प्रहरी	पूजा श्रीवास्तव	58
54	मासूमियत भरे मुखौटे	किशोर कुमार	59
55	मेरा अंदाज ए बयां लोगों को खलता है	मुकेश कुमार	61
56	मृत्यु जीवन का अंत नहीं है	हेमचन्द राय	62
57	मैं और तुम	श्रद्धा चौहान	63
58	मैं 'कमल'	कमला निखुर्पा	64
59	विनती	उमा उपाध्याय	66
60	संकल्प	दीपिका पाठक	67
61	संगठन की अभिलाषा	रोहित	68
62	स्मृति–छांव	आकांक्षा सेम्युएल	69
63	स्वयं करना पड़ता है	डॉ. रामप्रसाद पाण्डेय	70
64	तू चल	सोनी मौर्या	71
65	अफवाह	नरेंद्र कुमार रैसवाल	72
66	भारत की तस्वीर हूँ	प्रदीप कुमार मौर्य	73
67	स्वर्णिम प्रभात	महेश चन्द्र प्रजापत	74
68	मैं नारी हूँ	गीता सभरवाल	75
69	कारगिल दिवस	राकेश कुमार झा	76
70	उम्मीद की किरण	काशिफ अहसन	78
71	हौंसला	सनोज कुमार भारती	79
72	मेरी सोच	अनुराग पाण्डेय	80
73	एक प्रयास	मेघा आपटे	81
74	पदत्राण	डॉ. उमाशंकर पाण्डेय	83
75	शहीद का संवाद	जया नमन	85
76	तन–मन का योग	ज्योति जैन बिष्ट	86

S. N.	Title	Name of Poet	P. No.
77	Wear the Pendent of Independence!	N R Murali	87
78	Life is Beautiful	Rushina Irum	88
79	It was her Dream	K.S Soujanya Singh	89
80	2020 The year of challenges or opportunities	C K Vedapathi	90
81	Oh! Death	A.K.Joshi	93
82	Spontaneous Verse Dedicated To Corona Warriors	Manisha Sharma	95
83	The Brighter Side of Pandemic	D. Vikram Kumar Varma	96
84	Online School	Shweta	97
85	Myriads Colours of Life	R. Sujatha	98
86	Forest and Development	Amresh Kumar Singh	99
87	Hope	Sangita Singh	100
88	Precious But Momentry	Clement Indwar	101
89	Hope!	Vartika	102
90	The Silence	Dhwanika Bhatt	103
91	Light of Life	Sima Rani Das	104
92	Math- Magic	Sarmistha Deb Biswas	105
93	Need A Change	Anita Paul	106
94	Strange Walk	Rashmi Jain Bayati	107
95	Loneliness	Sini Rani S	108
96	Education	Deepak Kumar Juneja	109
97	I	Basudev Chakraborty	110
98	A Queue of Questions	Nithya R Warriar	111
99	Who is She?	Geetha.S.Nair	112
100	Don't Throw Away	Alak Bhattacharjee	113
101	Ecstasy	Rita Attri	115
102	Amid Pandemic My Teacher My Hero	Satish Kumar	116
103	Teachers: Pillars of The Nation	Jayasree Bhattacharyya	118
104	A Wanderer	Sudip Mazumdar	119
105	Searching Ray of Hope for Covid-19 Pandemic	Ajay Kumar Sahoo	120
106	Wake Up Call	Biranchi Narayan Das	121

S. N.	Title	Name of Poet	P. No.
107	We Are Bound to Fall And Rise	Priyanka Chibber	122
108	Where Gods and The Mountains Coexist	Mousumi De	123
109	Awake For A Better New World	B. Lekha	125
110	Dedicated to Doctors	Rakesh Rathee	126
111	Faith	Jyoti Meena	129
112	What is Pressure Cooker	Jaya Sharma	130
113	Nectar of Thy Divine Love	Nancy Chandran	132
114	Dawn At The Door	Juhi Chakraborty	134

1
मैं तो खुद ही कविता हूँ

अपलक दृष्टि स्क्रीन पर गड़ाए
कीबोर्ड पर उंगलियां दौड़ाता हूँ,
फाइलों के ढेरों में खोया
मैं तो खुद ही कविता हूँ।

खाना–सोना, हंसना–रोना,
घर–परिवार भूल जाता हूं,
कर्मक्षेत्र में दायित्व निभाता
मैं तो खुद ही कविता हूँ।

लक्ष्य मार्ग पर आगे बढ़ता
स्वप्नों को यथार्थ बनाता हूँ,
छोटे–बड़े सबका चहेता
मैं तो खुद ही कविता हूँ।

सुबह से शाम मेहनत करके
दाल रोटी जुटाता हूँ,
लोग कहते है कवि बन जाओ,
मैं तो खुद ही कविता हूँ।

प्रीतीश डबराल
कनिष्ठ सचिवालय सहायक
केंद्रीय विद्यालय, सी.आर.पी.एफ. रामपुर

2
संवेदना

यूँही गलियों में मन किया घूमने का,
घूमते–घूमते अचानक नजर पड़ी,
"अनाथों के नाथ दीनानाथ" वृद्धाश्रम,
पढ़ एक बार मन हुआ विचलित।

रुके न रुके मेरे कदम,
पहुँची अंदर तब लिया दम,
एक साथ इतने वयोवृद्धों को देख,
होने लगी स्वतः अश्रुओं की वर्षा।

अंतर–आत्मा रूपी भवसागर में,
संवेदनाओं ने ली हिलोर,
किया हल्का सा प्रयास दिल टटोलने का,
सुन उनकी वेदना हुई मैं संवेदनशील।

कोई था बेघर संपत्ति के लिए,
कोई था बेघर विदेश के लिए,
(बच्चों का विदेश जाना मात–पिता को आश्रम में छोड़ना)
कोई था बेघर चंद पैसों के लिए,
कोई था बेघर दूसरों की खुशियों के लिए।
(मात–पिता साथ रहने पर बच्चों को आजादी न मिलना)

सुन उनकी आपबीती,
रुह थी एक बार मेरी काँपी,

मन रुपी वीणा की ताग थी आज टूटी,
खड़ी रह गई में असमंजस में।

वाह रे ! सृष्टिकर्ता ––
होते चमत्कार हैं तेरे निराले देख,
इनकी इस अवस्था को देख,
होती होगी तुझे भी व्यथा इन्हें देख,
आखिर तू ऊहापोह में पड़ गया होगा,
क्यूँ की तूने इस सृष्टि की रचना?

टी. मालती
टी जी टी (हिन्दी)
केंद्रीय विद्यालय क्र. – 2,नौसेनाबाग विशाखापटनम

3
डर से जीतना होगा

कल को चैन से सोने के लिए, आज खुदकों जगाना होगा
मन की शंकाओ को दूर भगाकर, खुद पर नाज लाना होगा
कभी सूरज की रोशनी, तो कभी चाँदनी सिर पर उठाना होगा
मेहनत के रंग में तुम्हें अपना लक्ष्य पाना होगा।

ये ना सोचना की कभी रास्ता आसान होगा,
कुछ जाने पहचाना,तो कुछ बरबादी तूफान होगा
आयेगा कई बार अजनबी सा सैलाब रास्तों पर
हिम्मत से फिर भी आखिर में हौसला कामयाब होगा।

जीने की नयी चाह मे एक नया जोश लाना होगा
अपने डर को पीछे छोड़ आगे बढ़ जाना होगा
कोशिश करनी होगी हर मुमकिन कदम उठाना होगा
मुश्किल रास्तों पर चलते हुए भी हमें मुस्कुराना होगा।

हार के हर शक को खुद से दूर भगाना होगा
जीते न जीते अब सिर्फ आगे बढ़ते जाना होगा
मेहनत करके नाकामयाबी को उल्टी राह दिखाना होगा
ना डरेंगे ना रुकेंगे यही हर बार दोहराना होगा
अपने डर से विजय पाकर जिद में जीतकर दिखाना होगा।

सीमा शर्मा
एस.एस.ए. (ऑडिट अनुभाग)
के.वि.सं. (मु.)

4
माँ तुझे क्या बतलाऊँ

माँ मैं तुझे क्या बतलाऊँ।
माँ मैं तुझे क्या सुनाऊँ।
माँ मैं तुझे क्या समझाऊँ।
तू तो सर्वज्ञानी है।
प्रथम गुरु है।
तू तो अपने वक्ष से अमृत का रसपान करा कर
अबोध को बोध देती है माँ।
माँ मैं तुझे क्या बतलाऊँ।
शैशव से बाल्यावस्था तथा
प्रौढ़ावस्था तक तू अपनी
संतान के लिए मातृवत रहती माँ।
तेरा प्रेम है अनमोल रत्न।
इसे तौल नहीं सकता है धन।
माँ तुझको है मेरा शत–शत नमन।
तू प्रेम, दया, क्षमा की सागर है,
तू परकाष्ठा है अपने ज्ञान का, हुनर का।
माँ मैं तुझे क्या समझाऊँ।
माँ मैं तुझे क्या बतलाऊँ।
तू अनमोल है, तेरा प्रेम निश्छल है माँ।
तू तमस–तिमिर को भगाती, ज्योति–कीर्ति को फैलाती माँ।
कुछ भटके हुए संतान को राह दिखा माँ।
उन्हें राष्ट्र प्रेम का दिव्य ज्ञान तो करा माँ।
उन्हें पर्यावरण प्रेमी तो बना माँ।
उन्हें अपने अविरल प्रेम की धारा में बहा माँ।
माँ मैं तुझे क्या समझाऊँ।

तू ज्ञान की सागर है, प्रेम की मूरत है।
माँ तू तो एक तपस्वी है।
तेरा प्रतिबिम्ब धरती के हर कोने – कोने में है।
तू दुनिया की हर माँ में बसती है
माँ तू सर्वज्ञ है, सर्वव्यापी है, स्नेहिल है।
तेरा रूप अनेक है, पर भाव एक है।
वो भाव है मातृत्व का, स्त्री शक्ति का, मातृशक्ति का।
माँ तू प्रेरणा स्रोत है महिला सशक्तिकरण का।
माँ मैं तुझे क्या बतलाऊँ।
तू अगम्य है, अगोचर है।
तू अथाह है, अनंत है।
तू प्रवीण है, प्रज्ञ है।
प्रणय का प्रवाह है।
तू जया है, विजया है, सुधा है, कल्याणी है।
माता संत मैरी का अवतार है।
तू प्रशांत है, प्रदीप्त है।
प्रकल्प की धरोहर है।
तू चिरंतन है, तू सत्य है।
तू समय का प्रवाह है।
माँ तुझे शत–शत प्रणाम।
माँ तुझे शत–शत प्रणाम।

प्रवीण कुमार
प्रशासनिक अधिकारी
केंद्रीय विद्यालय संगठन क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली

5
मेरे देश का पहला प्यार है हिंदी

मेरे देश का पहला प्यार है हिंदी
शिष्टता सिखाने का हथियार है हिंदी

भूलकर अपनी संस्कृति को, जिसे पकड़ा है
उस पश्चिमी संस्कृति पर परिहार है हिंदी।

कभी ना भुलाया जाने वाला आचार है हिंदी
सम्मान बुजुर्गों को दिया जाने वाला सदाचार है हिंदी

हमारे देश की संस्कृति को दर्शाने वाला व्यवहार है हिंदी
माँ भारती का पहला प्यार है हिंदी।

पूरे देश को जो जोड़े वो आकार है हिंदी
सब भाषाओं में सबसे प्यारा प्रकार है हिंदी

दुनिया को पथ दिखाने वाला राहकार है हिंदी
पूर्वजों द्वारा दिये ज्ञान की रक्षा करने वाला चौकीदार है हिंदी।

अलग अलग भाषाओं का पुरा सार है हिंदी
शिकागो वाले भाषण का प्रचार है हिन्दी

संयुक्त राष्ट्र में मिला स्थान, वो अधिकार है हिंदी
युवाओं को जो जगाये, वो जय जयकार है हिन्दी।

मेरे भारत देश का पहला प्यार है हिन्दी,
शिष्टता सिखाने का हथियार है हिन्दी।

अमन कुमार
प्राथमिक शिक्षक
केन्द्रीय विद्यालय कैलाशहर उनकोटी, त्रिपुरा

6
इम्तिहानों का दौर

चारों तरफ बेचैनी और मुसीबतों का शोर है,
यह इंसान के सख्त इम्तिहानों का दौर है।
चांद से मंगल विजय का तूने जश्न मनाया है,
तेरी शख्सियत से तो एवरेस्ट भी घबराया है।
बिखर कर निखरने की तेरी आदत पुरानी है,
तेरा जीवन तो कामयाबी की कहानी है।
कौन कहता है कि तू इतना कमजोर है?
यह इंसान के सख्त इम्तिहानों का दौर है।
तुझे समस्या नहीं समाधान बनना है,
विफलताओं में भी सफलता के रंग भरना है।
हार के मुंह से भी जीत छीन कर लाना है,
सच्चा मानव बन कर सबके हित में जुट जाना है।
कौन कहता है कि आसमां में कुहासा घनघोर है?
यह इंसान के सख्त इम्तिहानों का दौर है।
जिंदगी की उलझनों में तुझे उलझ नहीं जाना है,
खुद ही नहीं संभलना बल्कि सबको संभालना है।
स्नेह, सद्भाव और साहस से मंजिल को पाना है,
लहरों से ना डर कर कुशल नाविक बन जाना है।
कौन कहता है कि मनुज अब कटी पतंग की डोर है?
यह इंसान के सख्त इम्तिहानों का का दौर है।
चारों तरफ बेचैनी और मुसीबतों का शोर है,
यह इंसान के सख्त इम्तिहानों का दौर है।

दिलीप कुमार शर्मा
स्नातकोतर शिक्षक हिन्दी
के.वि. क्रमांक 2, फॉय सागर रोड अजमेर

7
हां आगे बढ़ना होगा

उठो चुप ना रहो, आवाज लगाओ।
सब मुश्किलों का हल होगा।
आज वक्त भले ना हो ठीक तुम्हारा,
पर कल तुम्हारा बेहतरीन पल होगा।
आज भले ना हो संग तुम्हारे अपने,
कल सारा जमाना तुम्हारें साथ होगा।
उठो चुप...
हर सांस पर भले हो आज पहरा,
बहुत मुश्किलों ने तुम्हें हो घेरा।
ना थको, ना रूको, चलते तुम्हें रहना होगा।
अपनी मेहनत और हिम्मत से लक्ष्य पाना होगा।
उठो चुप...
पंख भले ही ना हो परिंदों से तुम्हारे पास।
पर हौसलों की उड़ान के साथ तुमको,
खुले आसमान तक ऊंचा उड़ना ही होगा।
माने लोहा दुनिया भी तेरी हिम्मत का,
कुछ इस तरह मिट्टी में रहकर,
तुम्हें आकाश में मिल जाना होगा।

मोनिका
प्रशिक्षित स्नात्तक शिक्षिका, (अंग्रेजी)
केन्द्रीय विद्यालय सैनिक विहार, दिल्ली

8
मैं टुकड़ों में बिखरे हुए हिंदुस्तान सा हूँ

किसी मुफलिस के जेहन में पले अरमान सा हूँ,
इस फरेबी दुनियाँ से मैं थोड़ा अनजान सा हूँ।

बचपन की यादें भी बड़ी दिलकश सी होती हैं,
मैं गीली मिट्टी पे चले कदमों के निशान सा हूँ।

अब तो मेरे खादिम भी रुसवा हुए मुझसे,
मैं तो बेवक्त पहुँचे हुए किसी मेहमान सा हूँ।

दुआ जिसकी मुसीबत में बड़ा असर दिखाती है,
कीमत अदा ना हो जिसकी माँ के उस अहसान सा हूँ।

कच्चे घरों में भी कभी खुशियों में शरीक होते थे,
अब साजिश की बदबू वाले बड़े मकान सा हूँ।

मिट्टी में ही मिल जाना है तुझको भी मुझको भी,
फिर भी मगरूरी में पनपी झूठी शान सा हूँ।

कभी मिलते थे चलते हुए दुआ सलाम होती थी,
मगर अब नफरतों के भंवर में फंसे इंसान सा हूँ।

नजर आता नहीं यहाँ किसी को दर्द मेरा,
मैं टुकड़ों में बिखरे हुए हिंदुस्तान सा हूँ।।

(1. मुफलिस – गरीब, निर्धन 2. खादिम – सेवक, खिदमतगार)

मनीष कुमार मुण्डोतिया
पीजीटी (अंग्रेजी)
केंद्रीय विद्यालय सोनपुर

9
स्वयं से साक्षात्कार

बहुत दिनों से स्वयं से मिल रहा हूँ
मौन, एकांत में अपने चहरे गिन रहा हूँ
स्वयं के द्वारा, स्वयं का साक्षात्कार कर रहा हूँ।
ये मैं ही तो हूँ,
जो हर कदम पर
मुझे रास्ता दिखाता है,
हर जीत पर अपनी पीठ थपथपाता है।
ये मैं ही तो हूँ, जो
उदास होने पर याद दिलाता है
कि जीवन है इक गीत
इसे गाना है
गुनगुनाना है, और हंस कर आगे बढ़ते जाना है।
कोई है,
जो हरपल मुझे
मेरी हर कमी बताता है।
हर कोने से मुझे हीरा बनाता है।
मैं स्वयं अपना जौहरी हूँ
निज द्वारा निज को तराश रहा हूँ।
कोई है
जो मुझे हर पल निहार रहा है,
अपूर्ण से निकाल कर,
पूर्ण कर रहा है।
ये अलग ही मजा है,
जो स्वयं से मिला है,
अब ताकत हूँ मैं अपनी,
अपना हूँ सहारा,
अब मैं स्वयं ही सागर हूँ, और स्वयं ही किनारा।

डॉ. गौरव शर्मा
टीजीटी संस्कृत
केन्द्रीय विद्यालय, लोकरा, असम

10
एक गीत
केन्द्रीय विद्यालय संगठन के लिए

स्वर्णिम अतीत की लेकर गाथा, आगे बढ़ते जाएँगे।
हम उन्नति के सोपानों पर, नित कदम बढ़ाते जाएँगे॥
केन्द्रीय विद्यालय भारत में,
शिक्षा का सबसे श्रेष्ठ तंत्र।
यह केंद्र ज्ञान और शक्ति का,
यह स्रोत प्रेम और मुक्ति का।
इस ज्ञानसूर्य की किरणों को, हर आँगन तक पहुँचाएँगे।
हम उन्नति के सोपानों पर, नित कदम बढ़ाते जाएँगे॥
हमने जाति और भाषा के,
बंधन की बेड़ियाँ तोड़ी हैं।
अपनी शाखाओं के जरिए,
संस्कृति की कड़ियाँ जोड़ी हैं।
अब एक राष्ट्र और एक प्राण, सपना साकार बनाएँगे।
हम उन्नति के सोपानों पर, नित कदम बढ़ाते जाएँगे॥
हमको जो रोके दुनिया में,
अब ऐसी कोई शक्ति नहीं।
है भाव हृदय में देशभक्ति का,
यह कोरी अभिव्यक्ति नहीं।
सद्ज्ञान, मूल्य और शिक्षा से, धरती को स्वर्ग बनाएँगे।
हम उन्नति के सोपानों पर नित कदम बढ़ाते जाएँगे॥

आशीष जैन
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय क्र.2 शिवाजी नगर, भोपाल

11
अरुणोदय

दीप सैकड़ों का,
रँग लाया संघर्ष
तेज ताप दिनकर का,
संग में लाया हर्ष
अहो बीत गई रैना काली काली सी!!

भोर हुई अब छाई,
हर तरफ है लालिमा
आभा के अद्भुत पुंज में,
छाया चंचल सिंदूरी आकाश
अहो चंचल–चंचल ये प्रकाश!!

कोयल मधुर सुनाती गीत,
मिलिन्द प्रसून का बना है मीत
रश्मि तेज तीर सी छूटी,
कर आलिंगन तुषार
अहो अलौकिक अरुणोदय आज!!

द्विज कोलाहल जयघोष बना,
लगा हृर्दयतल वैजन्ती
पा जाने अद्भुत ध्येय को,
होते प्रतिपल विहंग तैयार
अहो वैभव विजयी चले बयार!!

कल–कल बहती निर्झरिणी संग,
शत–शत सरोज खिले
धरणीधर हिम आच्छादित,
नभ भू सब एक करे
अहो यह सौम्य दृश्य, मम हृदय
भरे!!

मुकेश
पीजीटी अर्थशास्त्र
केन्द्रीय विद्यालय, सुन्दरगढ़

12
तत्–त्वम्–असि

बट बीज सूक्ष्म में छिपा हुआ है वृहत वृक्ष,
अनगिनत बीज हैं, अनत कहानी वृक्षों की।
इसी तरह अगणित जीवों की दुनियाँ का
है अंतहीन क्रम कहीं नहीं रुकने वाला । 1 ।

हैं विविध जीव और विविध जन्तु इस धरती पर
गुण, धर्म, प्रकृति हैं भाव सभी में पृथक – पृथक।
जलचर, थलचर, नभचर सबकी है कथा अलग
परभक्षी है कोई तो कोई पूर्ण विलग । 2।

जीव, जन्तु, स्थावर, जंगम जितने जग में
है जीवन – चर्या सबकी विलग विभिन्न यहाँ।
क्षुधा शांत करता है स्थावर की यदि वह
तो जंगम भी कोई भूखा होता क्या कभी कहाँ । 3 ।

उसी भूमि की उपज इक्षु है अति मीठा
मगर पास में नीम खड़ा कटुता वाला।
है रसाल रसभरा जहां रस का राजा
बादाम वहीं गुणवान मगर है शुष्क सदा । 4 ।

हैं गुलाब, चम्पा, गुड़हल या पुष्प कमल
हरसिंगार, कनेर, चमेली, जूही भी।
मिट्टी, जल अरु वायु सभी की एक सदा
पर रंग, गंध, गुण – धर्म सभी के अलग – अलग । 5 ।

घनघोर घटा में तड़ित शक्ति तुम कौन वहाँ,
त्रिभुवन में नित व्याप्त सदा तुम कौन वहाँ
देदीप्यमान मार्तंड वृहत आश्चर्य एक,
है युगों – युगों से चंद्र – कान्ति तुम कौन वहाँ ।
हैं, कोटि – कोटि ब्रह्मांड न पारावार यहाँ,
विज्ञान कहाँ – कहाँ तक जा कर खोज करे
हर अणु – विभु में है सदा सर्वदा कौन यहाँ,
दिन – रात, पक्ष, ऋतु, वर्ष नियंता कौन यहाँ । 6 ।

मन, बुद्धि, चित्त अरु अहंकार से परे कौन,
ब्रह्मांड कोटि में व्याप्त ये किसकी सत्ता है,
उस असीम को मैं ससीम क्या जानूँगा,
जो सदा सुप्ति में भी नित जागृत रहता है।
तर्क – कुतर्क – वितर्क सदा होते होंगे,
कृति क्या जाने कर्ता के बारे में अपने
जब नेति – नेति कह वेद मौन हो जाते हैं,
तब निराकार आकार शून्य से पाता है । 7 ।

पी सी खुल्बे
वरिष्ठ अनुवादक,
के.वि.सं. (मु.)

13
विद्यालय की बगिया

कुछ ही दिनों में यह सूरत बदल जाएगी,
विद्यालय की बगिया वापस महक जाएगी।

हमें कोरोना महामारी से नहीं डरना है,
तब तक ऑनलाइन शिक्षण के रंग भरना है।
नन्हें–नन्हें बच्चों की हंसी फिर से खिलखिलाएगी,
विद्यालय की बगिया वापस महक जाएगी।

माना कि कठोर वक्त आया है,
जीवन में महासंकट लाया है।
कोरोना काल के आतंक से निकल कर,
दुनिया एक बार फिर मुस्कुराएगी।
विद्यालय की बगिया वापस महक जाएगी।

हर स्थिति में ज्ञान का प्रकाश देना है,
इस महामारी से हमें सबक लेना है।
विद्यालय के सूने गलियारों में
बच्चों की आवाजें जल्द गूंज जाएगी।
विद्यालय की बगिया वापस महक जाएगी।

कुछ ही दिनों में यह सूरत बदल जाएगी,
विद्यालय की बगिया वापस महक जाएगी।

गोविन्द सिंह मेहता
प्राचार्य
के.वि. क्रमांक 2, फॉय सागर रोड, अजमेर

14
गुलमोहर

गुलमोहर छतनार कोमल लाल पीले पुष्पों से भरा।
सदैव मुस्कुराता हर परिस्थिति में मन का हरा।।

पतझड़ मैं झर जाते हैं उसके पीले पात।
फिर भर जाते हैं हरे हरे पत्तों से उसके गात।।

मौन खड़ा रहता देता है मधुमय छाया।
आकर्षित कर लेता उसको जो पास में उसके आया।।

मानव जीवन भी यदि गुलमोहर जैसा ही हो जाए।
तप्त ह्रदय को थोड़ी भी यदि ठंडक पहुंचा पाए।।

अपने कर्मों से यदि जग को आकर्षित कर पाएं।
मानव रूप में जन्म हमारा सार्थक हो जाए।।

अपने लिए जीना क्या जीना, पर हित जीना है बेहतर।
गुलमोहर यह सिखा रहा हों जन कल्याणी दृढ़तर।।

थोड़ी सी भी श्वास आस की डाले मृतकों में जान।
सच्चे अर्थों में सत्पुरुषों की यही उत्तम पहचान।।

गुलमोहर सा जिएं भले ही आयु हमारी कम हो।
पर जीवन को बेहतर कर दें जितना हममें दम हो।।

जीना मरना दोनों हमारा यदि गुलमोहर बन जाए।
मानव जीवन धन्य हमारा तभी सार्थक हो पाए।।

फूलचंद्र विश्वकर्मा
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक–2, हलवारा

15
पलायन

वैश्विक संत्रास के कालावधि
जन विहीन है राहें
पथ–निस्तब्ध... नीरव... सुनसान..
अचानक उठा हजारों–हजारों सिरों का हुजूम।
भर जाता है जब हृदय उनका
घूंट तिरस्कार का घोटकर।
बुद्धि खा जाती है शिकस्त
निराशा की जंजीर तोड़ते–तोड़ते
रह जाती है सिर्फ मायूसी।
गंतव्य क्या है मानव के इस कोलाहल का,
फिलहाल इस पलायन का
सोच–बस कौंध जाता है एक सवाल
क्या यही है मानव की हजारों–लाखों वर्षों की साधना का फल
ऊब जाता है हृदय जब
धँस जाता है माथा फिक्र से
तब
ओ मेरी कविता
मैं फिरता हूं तुझ में
तेरे आगोश में
उस लक्ष्यहीन हुजूम की तरह
पा लेता हूँ
स्वयं में खुद को।

ब्रजेश चौधरी
टीजीटी हिन्दी
केन्द्रीय विद्यालय बांका

16
मेरी कविता

मेरे सु–मन उदगार को देखो, शब्दों में सन जाती है।
सब कहते हैं धीरे–धीरे, कविता सी बन जाती है॥

मधुर राज जब दीप–का–नेही, निशा ऊषा कहलाती है।
दिव्य भाव निर्मल हो तब ही, करुणा से भर जाती है॥

भक्त उमा–पति लहर त्रिलोक में, तप–अश्विन करवाते हैं।
कमलाशीष मिले जीवन में, तब राम नरेश बन जाते हैं॥

ललित राग मन आनंदित हो, नैनन में शोभा आती है।
आकांक्षाओं के दीप जला कर, दीपाली मन जाती है॥

चलो बढाएं सीमा अपनी, जब सिंधु पार कर जाएं।
खिल उठे तब अरविंद औ, भ्रमर अनुराग सुनाएँ॥

कौशल अर्चना की ज्योति जले, मूकुलिकाएं खिल जाएं।
माँ वसंत की वीणा से, लावण्य गौरि–शिव पाएं॥

अंतकाल तारा बन नभ में, बबिता सी इठलाएं।
बन दिनेश धरती अम्बर में, पुंज प्रकाश फैलाएं॥

सोचो ये एहसास मनोरम, हृदय मंगल कर जाती है।
सब कहते हैं धीरे–धीरे, कविता सी बन जाती है॥

दिनेश कुंवर पटेल
स्नातकोत्तर शिक्षक (संगणक विज्ञान)
के. वि. आई आई टी पवई, मुंबई

17
मेरे सपने कुछ बड़े नहीं

मेरे सपने कुछ बड़े नहीं
एक छोटा सा घर हो, छोटा सा आंगन हो।

उस आंगन की चार–दिवारी मे खुशियों के मेले हों
चार–दिवारी की खिड़कियों पे रंग हजारों फैले हों।

एक छोटी सी मटकी जिसमें शीतल पानी हो
उस पानी की शीतलता की अपनी एक रवानी हो।

एक छोटा सा बगीचा जिसमें फूल हजारों हों
जिनके खिलने से जीवन में उजियारे हों।

दो छोटे–छोटे से कमरे जिसमें अपना परिवार बसे
माँ–बाप, भाई–बहन की चाहत का संसार बसे।

सावन के मौसम में कोयल अपना राग करे
जिसको सुन मन की चिंता अपना ही विराग करे।

जीवन की इन राहों का न दूजा कोई किनारा हो
जब–जब जीवन मे बाधा आए तब–तब कोई हमारा हो।

दो वक्त की रोटी का अपना एक सहारा हो
जिससे परिवार चले और जीवन का गुजारा हो।

मेरे सपने कुछ बड़े नहीं
एक छोटा सा घर हो, छोटा सा आंगन हो।

प्रदीप कुमार
क.स.सहा. (प्रशा.2)
केविसं. (मु.)

18
नादान परिंदे

कुछ नादान परिंदों को उड़ान देना चाहता हूँ
उन्हें ऊँचाइयों का आसमान देना चाहता हूँ।
बहुत लम्बा है सफर मंजिल तक पहुंचने का
नन्हें कदमों को उनका मुकाम देना चाहता हूँ।
शिक्षक हूँ बच्चों का जिम्मा है मेरे कन्धों पर
बेहतर भविष्य का उन्हें अरमान देना चाहता हूँ।
बच्चे हैं जिन्दगी के मायने भला क्या जानें
असल जिन्दगी का उन्हें ज्ञान देना चाहता हूँ।
राष्ट्र और इंसानियत ही एक जिनका धर्म होगा
ऐसे भावी हाथों में हिन्दुस्तान देना चाहता हूँ।

मुदित पाण्डेय
टी जी टी संस्कृत
केन्द्रीय विद्यालय एन आई टी अगरतला

19
सच्चाई का जीवन

सुविधाओं ने दुश्मन समझा
दुविधाओं के खास रहे,
सच्चे लोगों के जीवन में यही
विरोधाभास रहे!

सपनों की क्या बातें,
नीदें डूब गयीं चिन्ताओं में ही
तारतम्य तक नहीं बन सका
प्राप्त और इच्छाओं में ही
जिस दिन लंगर बँटा, हमेशा उस
दिन ही उपवास रहे,
सच्चे लोगों के जीवन में यही
विरोधाभास रहे!

सिर के नीचे रही सदा ही
अकड़ी हुई रीढ़ की हड्डी
दौड़े भागे बहुत मगर हाँ
झुकने में रह गये फिसड्डी
कण्ठों में प्यासों को ढोते, नदियों के
भी पास रहे,
सच्चे लोगों के जीवन में यही
विरोधाभास रहे!

जिसे उम्र भर जोड़ा उसको
देखा सबसे पहले टूटा
जिसे छोड़ना था वह चिपका
जिसे चिपकना था वह छूटा
जिस जिस जगही हँसी आनी थी,
हर उस जगह उदास रहे,
सच्चे लोगों के जीवन में यही
विरोधाभास रहे!

सिर पर अपने सपने रखते
तपते दुनियादारी में
इतने सपने आते हैं कि
वो डरते अक्सर सोने से
अपनी किस्मत के लिए वो, कभी भी
ना खास रहे,
सच्चे लोगों के जीवन में यही
विरोधाभास रहे!

नन्द किशोर छंगाणी
कनिष्ठ सचिवालय सहायक
के.वि.सं. (मुख्यालय)

20
पुरुषार्थ

घूमती ऋतुचक्र
मन मस्तिष्क मानव का।
कापुरुष की वंचना
समझ कर नासमझ बनता
खुद बनाए जाल में जाता उलझता।
पर न लेता सीख
समय को देख पछताता
व्यूह नित नूतन बनाता
और उलझता ही जाता।
दोष देता भाग्य को
छोड़ कर पुरुषार्थ को
या कभी कायरता अपनी छिपाता
पर न देता दोष अपने कर्म को।
पुरुषार्थ
समय की धार में
कर्तव्य की पतवार ले
मार्ग नित नूतन बनाता
कर्म – पथ पर अग्रसर
लक्ष्य पर रख ध्यान
समय के साथ हो
कर्म को पहचान
मार्ग नित नूतन बनाता।

सुरेंद्र कुमार पाठक
पी जी टी (हिन्दी)
के वि 39 जी टी सी. वाराणसी

21
मत होना कभी निराश

रात के तम को चीरकर
आशा का प्रभात देता है दिनकर
चाहे कितनी भी हो मुसीबत
हृदय में रखो धैर्य और हिम्मत
मन में हो उम्मीदों का वास
मत होना कभी निराश।

कुदरत के रंग हैं छाँव और धूप
जिन्दगी में है सुख–दुःख के रूप
हार–जीत है स्पर्धा के दो पक्ष
भीषण चुनौती भी हो तुम्हारे समक्ष
हार के डर से क्यों होना हताश
मत होना कभी निराश।

पेड़ पर बैठा पक्षी गिरने से नहीं डरता
पंखों पर अपने विश्वास रखता
कर्मवीर को नहीं असफलता का भय
परिश्रम से है उनका निश्चित विजय
हमेशा करो मेहनत पर विश्वास
मत होना कभी निराश।

पर्वत, तूफानों से नहीं घबराता
पतझड़ के बाद भी हरियाली आता
कौन कहता है, तुम हो कमजोर
लगा दो अपनी ताकत पुरजोर
मुश्किलों से क्यों होना उदास
मत होना कभी निराश।

दृढ़ संकल्प का हो भाव
मेहनत और लगन के हों तुम्हारे पाँव
हो जाये जितनी परिस्थिति विकट
आ जाए कितने दुःख–दर्द निकट
साहस और धैर्य से, सदा करो प्रयास
मत होना कभी निराश।

ओमप्रकाश चंद्राकर
प्राथमिक शिक्षक
केन्द्रीय विद्यालय महासमुंद

22
मानव को अंतिम चेतावनी

प्रकृति की हर कृति कल्याणकारी जीव की,
पर हो मनुज पागल हिलाता ईंट हर इस नींव की।
विध्वंस करके सृष्टि का सर्जन उसे बतला रहा,
तू दौड़ अंधी भर रहा, निज शान पर इठला रहा।
तू ध्वंस रूपी बीज का इसमें बपन क्यों कर रहा,
तू बाँध तटिनी के तटों को वारि संचित कर रहा।
पर पंचतत्त्व के तत्त्व की ही शक्ति से अंजान है,
अपने पुरातन पुरुष मनु का क्या तनिक भी भान है।
जलमग्न भू होगी यहाँ, भू पर दिखेंगीं ब्याधियाँ,
तब आँधियों में आग जल, जल की उठेगीं आँधियाँ।
तू मुकुट महि के महिधरों को निर्दयी बन रौंदता,
संतान के तेरी दुःखों का भय न उर में कौंधता!
विस्फोट कर गिरि के हृदय को दे रहा आघात है,
भूकम्प को फिर हे मनुज! क्यों कह रहा अभिशाप है।
तपती धरा के घाव को जो वृक्ष शीतल कर रहे,
वे उम्र अपनी देख तेरी गोद को ही भर रहे।
तू आज उनका बन गया बैरी विकट इस सृष्टि में,
मरुभूमि ही रह जायेगी मानव तेरी हर दृष्टि में।
बस उद्धरण रह जाएंगे रंग के हरे पहचान को,
तब परिकथा में ही सुनें मुरली मधुर की तान को।
फिर आत्मा तेरी मनुज निर्वात से चिल्लाएगी,
तब लौट उसकी प्रतिध्वनि भू–खंड से टकराएगी।
विकृत 'कृति भगवान की' इतनी यहाँ हो जाएगी,
वह चीख पर तेरी मनुज कुछ भी नहीं सुन पाएगी।
कल–कल यहाँ की काल–कवलित हो कभी भी जाएगी,
तू रोक मानव स्वयं को हस्ती तेरी मिट जाएगी।

रवि कुमार
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, हिंदी
केन्द्रीय विद्यालय, पय्यन्नूर, केरल

23
बादल से कब डरा है सूरज

कर्म को माने पूजा अपनी, किस्मत वही बदलता है।
बादल से कब डरा है सूरज, देखो रोज निकलता है।।

पेड़ डरे कब तूफानों से,
नदी पहाड़ों से है डरी
खुशबू को रोका है किसने
रातें हों कितनी गहरी

कठिन तपस्या करे बीज जब, अपना रूप बदलता है।
बादल से कब डरा है सूरज, देखो रोज निकलता है।।

चींटी को तुम चलते देखो,
और मकड़ी के जालों को
देखो तुम मजदूर के तलवे,
और हाथों के छालों को

कुंदन उतना दमके यारो, जितनी बार पिघलता है।
बादल से कब डरा है सूरज, देखो रोज निकलता है।।

हार किसे कहते हैं बूझो,
और तेज औजार करो,
मौका मिलते ही मंजिल पर,
फिर अपना अधिकार करो

रूकने वाला हार गया और, जीता वही जो चलता है।
बादल से कब डरा है सूरज, देखो रोज निकलता है।।

संजय कुमार जैन
सहायक अनुभाग अधिकारी
केन्द्रीय विद्यालय संगठन, संभागीय कार्यालय
जबलपुर (म.प्र.)

24
जीवन पथ

सुमनों की अभिलाषा में, आशाएं यदि
पुष्पों की हों;
मन मंदिर में इच्छाएं यदि कुसुमी हो
सारंगी हों।
साध्य अपंकिल आलौकिक हों,
साधन पूण्य प्रसूनी हों।
तब जीवन पथ पर
मोह भ्रमों की इन भूलों से,
कर्म पथों के इन शूलों से,
पग–पग के छल–प्रतिकूलों से,
विघ्नों के हठ–अवरोधों से,
संकट के शत नग–शैलों से,
जय पाना होगा।
सत–पथ पर चल–चल कर, प्रांजल
आदर्शों पर जीना होगा।
पुरुषार्थ चतुष्ट्य की प्रज्ञाओं पर
सत्यम शिवम का अनुगामी हो,
अर्थ, काम, इति मोक्ष प्रधान को
धर्म ध्वजा का अनुवर्ती हो।
अर्घ्य बना निज स्वेद कणों को
निश्चय नित कालजयी संकल्पी हो।
सुख में दुःख में रख एक भावना,
कामना मृदुल मृदंगी जय की हो।
तब जीवन पथ पर
नित नूतन झंझाओं को सह,
"कर्मणि एव अधिकारः ते"
की रीति –नीति, निर्लिप्त भाव से,
ले त्र्यम्बकी आह्वान दृढ़ से,
कर शोणित में द्योतित निज अस्थि
वर्तिका
ज्योतिर्मय हो जलना होगा, प्रांजल
आदर्शों पर चलना होगा।

प्रकाश चन्द्र तेवाड़ी
प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 1 तेजपुर, असम

25
कदम आगे रख तो सही

हजारों मुश्किलें होंगी राह में,
पर फिर भी एक कदम बढ़ा तो सही।
साकार होगा हर सपना तेरा,
कदम आगे रख तो सही।

इतना भी मुश्किल नहीं,
कि जिसे कर ना सके तू।
मंजिल दूर ही सही पर इतनी भी नहीं,
वहाँ पहुँच ना सके तू।
कदम आगे रख तो सही।

तेरा भी होगा इस दुनिया में नाम एक दिन,
पहचान तेरी भी अपनी होगी।
लिख तो सही तू कुछ,
पढ़ तो सही तू कुछ।
कदम आगे रख तो सही।

कब तक सपनों के समंदर में गोता लगाता रहेगा,
अब एक राह पकड़ तो सही।
उठ नींद से और कुछ काम तो कर,
कदम आगे रख तो सही।

सीख तो अवश्य मिलेगी कुछ ना भी मिला तो,
अनुभव भी साथ ले जाएगा जिंदगी का।
संभल जाएगा गिरते पड़ते एक दिन,
जीत ही जाएगा फिर एक दिन तू।
कदम आगे रख तो सही।

शिव लाल सिंह
प्राचार्य,
के.वि. सालबोनी

26
देहाती दुनिया

शहर की दुनिया को छोड़ मुझे गाँव जाने दो।
इस अजनबी भीड़ को छोड़ अपनों के पास जाने दो।
जहाँ रहता है देश का कर्णधार, पालनहार,
मेरा जी करता है उनसे मिलने को बार–बार।

कितना खेलते, कूदते थे गाँव के चौगानों में,
जिंदगी कैद हो गई है अब शहर के अट्टारी मकानों में।
बेपटरी दौड़ती जिंदगी से हो गया हूँ परेशान मैं,
फिर भी पटरी पर दौड़ रहा हूँ अकेला गुमनाम मैं।

जहाँ चलती हैं हवाएँ बादलों को चूम–चूमकर,
जी वहीं जाने को कर रहा है झूम–झूमकर।
अब पंखों की गर्म हवा से वो झोंपड़ा याद आता है,
शहर में श्वांस रूकती है तो गाँव याद आता है।

ट्रैफिक जाम में चारों और फँसे जा रहा हूँ मैं,
ऐसा लग रहा है कि पागलखाने में जा रहा हूँ मैं।
पगडण्डी पर अनवरत चलने को जी कह रहा है,
सोते–जागते भी नादान–सा मन वहीं घूम रहा है।

सुबह – शाम लेता था बड़े बूढ़ों का आशीर्वाद,
अब हाय – हेल्लो से दिन गुजार लेता हूँ।
आज भी खूब आती है देहाती दुनिया की याद,
फिर भी सिरफिरे मन को मार लेता हूँ।

सोहन लाल
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय चिक्कोड़ी, बेलगाँव

27
अब के बरस इस सावन में

अब के बरस इस सावन में कुछ ऐसी हो बरसात,
नफरत दिलों से धुल जाये बस प्रेम की हो बात।

कोयल, मोर, पपीहे गाएं, मेघ मचायें जम कर शोर,
श्याम घटा छा जाये गगन में, नदियों में भी उठे हिलोर।
कागज की फिर नाव चलाएं सब बच्चे एक साथ,
अब के बरस इस सावन में कुछ ऐसी हो बरसात

फूल खिलें वन–उपवन में चारों ओर हरियाली हो,
प्यास बुझ जाए वसुंधरा की हर घर में खुशहाली हो।
सूखे बीजों को मिल जाए फिर नवजीवन की सौगात,
अब के बरस इस सावन में कुछ ऐसी हो बरसात

गुंजन करें भंवरें बागों में मंद–मंद फिर चले बयार,
गर्मी में मिले शीतलता बूंदों की जब हो बौछार।
लौट आए जीवन में रौनक इस महामारी से मिले निजात,
अब के बरस इस सावन में कुछ ऐसी हो बरसात

खेतों में लहराएं फसलें बजने लगें ढोल और मृदंग,
जीवन में भर जाएं हमारे इंद्रधनुष के सातों रंग।
हंसी खुशी में बीतने लगें फिर सबके दिन और रात,
अब के बरस इस सावन में कुछ ऐसी हो बरसात

देवेंद्र कुमार देरान
प्राचार्य,
के.वि. हैप्पी वैली, शिलांग

28
उड़ान

मां तेरे सपनों की गौरेया हूँ,
तेरे आंगन में मुझे फुदकने दें,
मुझे भी तेरे आंचल में मचलने दें,
अपने लाड़ले को चाहे जितना आसमां दें,
मेरे हिस्से के आसमां में उड़ान मुझे भरने दें।
तेरे टूटे सपनों को सच करने का माद्दा रखती हूँ,
समन्दर की लहरों से खेल सकती हूँ,
आसमां की ऊँचाईयों को भेद सकती हूँ,
ये धरती भरी पड़ी है, वीरांगनाओं से,
मैं अपने हौसले की उड़ान से –
हौसलों को भी जीत सकती हूँ।

अदिता सक्सेना
प्राथमिक शिक्षिका
केन्द्रीय विद्यालय, क्र. 1 एसटीसी, जबलपुर

29
एक मुसाफिर ऐसा

स्वेद–श्रम से भीगा है बदन, सुख–दुःख की सीढ़ी पर चढ़कर,
मन में नूतन सपने भरकर, आशा की गलियों से चलकर।
वक्त की मुट्ठी से वो अपने हिस्से का आसमां पाता है,
एक मुसाफिर ऐसा है जो, थक कर भी चलता जाता है।।

हालातों की डोरी से बंधकर, जब आँसू रात बहाती है,
जब लहरें शोर मचाती हैं, और किस्मत रूठी जाती है।
तब भी तट पर ले जाने को वो अपनी नाव चलाता है,
एक मुसाफिर ऐसा है जो, थक कर भी चलता जाता है।।

हर दिशा से आती है आँधी, पर्वत भी जब हिल जाते हैं,
बाधाओं के जमघट मिलकर जब अपना रंग दिखाते हैं।
झूठ की भीड़ से अलग हटकर वो अपनी राह बनाता है,
एक मुसाफिर ऐसा है जो, थक कर भी चलता जाता है।।

जब सूरज भी बुझ जाता है और चंदा शोक मनाता है,
भाग्य भी सहमा–सिमटा हतप्रभ अपना शीश झुकाता है।
तब दीपक की लौ में अपना वो स्नेहिल रक्त मिलाता है,
एक मुसाफिर ऐसा है जो, थक कर भी चलता जाता है।।

कर्तव्य पथ पर है अविचल, सबके हित सब कुछ अर्पित कर,
उम्मीदों की सुंदर बगिया से सुरभित कलियों की अंजुली भर।
अपने रक्तिम रंगों–बू की माला वो माँ धरती को पहनाता है,
एक मुसाफिर ऐसा है जो, थक कर भी चलता जाता है।।

संजय कुमार
पीजीटी हिंदी
केन्द्रीय विद्यालय, सेक्टर–8, रोहिणी, दिल्ली

30
कलम

ये कलम हमें सिखलाती है।
भाषा का राज बताती है।

यह दुनिया की सच्ची ताकत
साबित कर के दिखलाती है ।

स्याही इसकी पहचान है,
लेखन अंतिम परिणाम है।

आर्य भट्ट हों या मैक्स मुलर।
सबके लिए कलम कमान है।

लेखक की सच्ची लेखनी कागज पे जब डोली है।
प्रेम के तरल भावों से जन–मन की भाषा बोली है।

इसी लेखनी ने दिया गरीबों को नव–प्राण है।
इसी कलम ने किया कितनों का आत्मत्राण है।

यह कहीं अटल की कविता है।
तो कहीं कलम ही कलाम है।

शस्त्र उठाने से बेहतर उठा लो कलम महान है।
अधिकारों के संग– संग देती ये हमको सम्मान है।

पवन कुमार
प्राथमिक शिक्षक
केंद्रीय विद्यालय आस्का

31
दीप जलाना होगा

बेटी है बोझ पिता के सर, यह दाग मिटाना ही होगा।
अब दूर अंधेरा करने को, हमें दीप जलाना ही होगा।।

जब तक बेटी ना सुरक्षित है, हम कैसे दुर्गा को पूजें,
अंकुश विहीन दुःशासन हैं, हम व्यर्थ द्रोपदी को कोसें।
तुम चीर बढ़ाने को छोड़ो, अब चक्र चलाना ही होगा,
अब दूर अंधेरा करने को हमें दीप जलाना ही होगा।।

बहुओं पे भार उम्मीदों का, बेटी को कहें नाजों की पली,
मत भूलो किसी के उपवन की, वह लाड़ली भी मासूम कली
बेटी औ' बहू के अंतर को, हमें आज मिटाना ही होगा,
अब दूर अंधेरा करने को हमें दीप जलाना ही होगा।।

कजरा, बिंदिया, पायल, कंगना, राखी बेजान नजर आते,
आंगन की तुलसी बिटिया बिन, घर भी वीरान नजर आते।
क्यों कोख में मारी जाती वो, इंसाफ दिलाना ही होगा।
अब दूर अंधेरा करने को हमें दीप जलाना ही होगा।।

वह बोझ नहीं है शक्ति है, शबरी, मीरा सी भक्ति है,
कल्पना, सुनीता, सिंधु है, गौरी, सीता, सावित्री है।
उस प्रेम,त्याग की मूरत को, सम्मान दिलाना ही होगा,
अब दूर अंधेरा करने को हमें दीप जलाना ही होगा।।

डॉ. योगेश कुमार
पुस्तकालयाध्यक्ष,
केंद्रीय विद्यालय डबरा

32
पर्यावरण बचाएं

कुल्हाड़ी लेकर बढ़ते,
पिपासु मानव को देख,
पेड़ चिल्लाया –
''मत काटो, मत काटो, मत काटो''
मगर आदमी,
पेड़ों की भाषा नहीं समझता,
नहीं सुनता प्रकृति की पुकार, और मारता चला जाता है–
अपने पैरों पर कुल्हाड़ी,
वृक्षों पर कुल्हाड़ी चलाते – चलाते।
भूल जाता है वह कि –
वृक्ष उसकी सांसों का सरगम है, वृक्ष आने वाली पीढ़ी का दमखम, है
वृक्ष जलवायु के रक्षक हैं,
मगर मानव क्या हैं बस भक्षक हैं।
चेहरे पर चढ़ा आवरण है,
इसलिए संकट में पर्यावरण है।
अभी भी वक्त है –
संभलें वृक्ष बचाएं, नदियां बचाएं,
प्रकृति की गोद में बैठें,
और खुद को बचाएं,
भौतिक प्रगति के गीत भी,
तभी गुनगुनाएंगें,
जब हम पर्यावरण बचाएंगे।

अरविन्द कुमार
प्राचार्य
केंद्रीय विद्यालय क्रमांक–2 रुड़की

33
साँस तो लेने दो मुझे

साँस तो लेने दो, अभी मिला है जन्म मुझे
जिम्मेदारियों के बारे में, अभी से मत समझाओ मुझे
रकीबों की दौड़ में, अभी से मत दौड़ाओ मुझे
फर्क लोगों के मजहब का, अभी से मत सिखाओ मुझे
साँस तो लेने दो अभी मिला है जन्म मुझे १

अभी से दुनिया की रस्में न बता कर, जी लेने दो मुझे
अभी से दुनिया की चालाकियाँ न बता कर, जी लेने दो मुझे
अभी से रकीब न बना कर जी लेने दो मुझे
अभी से अपनी चिंताएं न बता कर जी लेने दो मुझे
साँस तो लेने दो अभी मिला है जन्म मुझे २

अभी से सपने मेरे, मत पूछो मुझसे
अभी से स्थान मेरा, मत पूछो मुझसे
अभी से वजूद मेरा, मत पूछो मुझसे
अभी से जिम्मेदारी मेरी, मत पूछो मुझसे
साँस तो लेने दो अभी मिला है जन्म मुझे ३

मत सिखाओ अभी से मुझे वक्त सब सिखा देगा
वो चालाकियां, वो रकीबत, वो महजब सब बता देगा
जैसी है दुनिया वैसा ही हो जाऊंगा,
रकीबों की दौड़ में मै भी रकीब हो जाऊंगा
पर अभी जीने दो मुझे,
"पार्थ" को जरा साँस तो लेने दो
इस खूबसूरत दुनिया से पहचान तो बनाने दो
साँस तो लेने दो अभी मिला है जन्म मुझे ४

प्रवीन कुमार पाठक
जे.एस.ए
के.वि. अंबिकापुर

34
स्वयं

तू ही कलि, तू ही कल्की,
सब कुछ तेरे भीतर है।
देव– दानव सब इस देह में,
तू किसको पहचाने, ये तुझ पर है।
तिमिर तेरा पथ– प्रदर्शक या प्रकाश तेरा बंधु है,
तू ज्योति को चुने या तम का तुझ पर प्रभुत्व है।

हाँ, सब कुछ तेरे भीतर है।
आलोचना से ना विचलित हो,
आत्म मुग्ध तू ना रक्त रंजीत हो,
शब्द शूल से ना हृदय पीड़ित हो,
प्रशंसा से ना मोहित हो,
आत्म अध्ययन बाकी है,
स्वयं का ही महत्व है, हाँ, सब कुछ तेरे भीतर है।

तेरा प्रेम, तेरा साथी, तेरा लक्ष्य ,तू खुद है,
असुर तू, निराकार तू,
प्रश्न तू, उत्तर तू,
काजल तू, कलंक तू,
मायाजाल तू, ध्रुव तू,
मृगतृष्णा तू, गंगा जल तू,
''अहम ब्रह्म अस्मि'' का आत्मसात कर,
ये जान ले कि अर्ध नारीश्वर सा सम्पूर्ण तू है,
हाँ, सब कुछ तेरे भीतर है।

अपने अन्तर्द्वन्द्व का,
महारथी तेरे रण का,
तू सारथी है स्वयं का
भागीरथी तू स्वयं का,
अपनी ज्ञान गंगा का स्वयं आवाह्न तू है।
हाँ, सब कुछ तेरे भीतर है।
तू ही कलि, तू ही कल्की,
तू क्या बन जाए, यह तुझ पर है।

सुनीता
प्राचार्या–II
केन्द्रीय विद्यालय बिहोली समालखा

35
ओस के घने कुहासे में

ओस के घने कुहासे में लिपटी सफेद चादर,
जैसे कोई धुआं हो या चारो तरफ लिपटी रुई।
सहसा चलने को उद्यत जो चरण हुए,
देख वेदना ठिठक करुण हुए,
देखा फुटपाथ पर सोये बच्चे।
पास पड़े हैं कुल्हड़ आधे पक्के कच्चे,
लिए अपने भविष्य के अपूर्ण सपने।
इनकी वेदना को अश्रुओं से क्या तोला जाये,
क्या बालपन की भावना को यूँ ही दबा दिया जाये।

योगेश कुमार बारेठ
प्र.स्ना.शिक्षक(हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय मनमाड

36
घर क्या है

घर क्या है
आत्मा का ताप है,
संस्कार है,
प्यार है,
जिजीविषा है,
ललक है।

महक है बचपन की,
आँगन है खेल का,
एक बड़ा आगे,
पीछे चलती रेल का,
खेल–खेल और खेल का।

खिलखिलाती धूप है,
ठण्ड में आराम देता अलाव है,
कभी जीवन का गिरना
तो कभी जीवन का उठाव है।

घर क्या है
होली का रंग है,
जीने का ढंग है,
मौसम की मार है,
कभी तपती धूप में
बारिश की शीतल बौछार है।

घर क्या है
क्या नहीं है
कहना मुश्किल है।
घर ये है
घर वो है,
घर सब कुछ है।
हाँ, सच!
घर ही सब कुछ है।

नीरज सिंह मीणा
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 1 वायुसेना स्थल भुज

37
मैं स्त्री हूँ!

सौम्य हवाएं अपना रुख बदल सकती हैं
कभी वे आंधी बन सकती हैं
कभी वे तूफांन भी ला सकती हैं
यह उनका दोष नहीं है
वे ऐसा कर सकती हैं
शांत नदी भी शोर मचा सकती है
कभी वह प्रवाह की हदें पार कर सकती है
कभी वे किनारे तोड़कर बाढ़ भी ला सकती है
यह उसका दोष नहीं है
वह ऐसा कर सकती है
करुणामयी वसुंधरा कभी करवटें बदल सकती है
कभी वह हलचलें पैदा कर सकती है
कभी वह लावा भी उगल सकती है
यह उसका दोष नहीं है
वह ऐसा कर सकती है
मुझे परवाह नहीं किसी की भी
मैं किसी के विचारों तले दबी नही हूँ
लगे कि कुछ गलत है तो
मैं प्रतिकार भी कर सकती हूँ
ये मेरा दोष नही है
ये तो मेरी पहचान है!
मैं सौम्य की प्रतिमूर्ति अबला ही नहीं
मैं एक शक्ति भी हूँ!
हाँ मैं एक स्त्री हूँ

तारा चंद सैनी
टी जी टी (विज्ञान)
केंद्रीय विद्यालय, ओ एन जी सी, अगरतला त्रिपुरा

38
अप्रासंगिक

कितना करुणामय है
महसूस करना कि
कैसे खा जाता है लयता का आग्रह,
एक कविता के अंतस को।
या फिर कैसे आडंबर के वशीभूत
किसी कथा वाचक की वाचालता
कैसे चबा जाती है राम कथा का मंतव्य!

कितना दयनीय है अनुभव करना
कि किस तरह कृत्रिम और अश्लील संवाद
घोंट देते गला कहानी के सुंदर प्रवाह का
या फिर किसी गंभीर चर्चा के बीच
किस तरह कोई चाटुकार
गटक जाता तमाम गंभीर आपत्तियों को
अपनी अट्टाहास की ओट में।

कितना विषादकारी है देखना
कि कैसे सांख्यिकीय आंकड़े
सरासर निगल जाते हैं
हमारी दैनिक समस्याओं का अस्तित्व!
और हम कैसे ठगा महसूस करते हैं
उस बच्चे की मानिंद,
जो किसी हिल स्टेशन पर
सुसज्जित पैकेट बंद महंगी टोकरी में
पाता है सिर्फ चंद दाने स्ट्रॉबेरी के!

इस तरह अप्रासंगिक
निगलता जा रहा है प्रासंगिक को
हर जगह, हर तरफ
और विस्तृत होता जा रहा मानव मेधा का रेगिस्तान उत्तरोत्तर,
बढ़ती जा रही मानव हृदय की तड़प भी युगपत
और इस तड़प को कम करने के
किये जा रहे है तमाम बुद्धिजीवी उपाय
– निहायत अप्रासंगिक !

नेत्र सिंह
प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 1
एच. एफ. सी. बरौनी

39
कृतज्ञता

धूप, वायु, नीर की
किसके प्रति कृतज्ञ हों
दिनकर की दिव्यता
का भार इतना शेष है,

जीवन चुका दे तो क्या
ऋण अभी तो शेष है।

पवन जो नित – नित बही
पल–पल बही, बहती रही
एक क्षण विश्राम करना
सीखा नहीं उसने कभी,

जीवन बनी प्रति जीव का
उसका ऋण अभी तो शेष है।

नीर का उपकार इतना
हो गया वर्णनातीत
नीर बिन जीवन कहां
ज्ञात इतना जीव को,

प्रति बूंद है जीवन बनी
उसका ऋण अभी तो शेष है।

वसुंधरा के धैर्य की
उपमा नहीं जगती में है
हम सभी के बोझ को
सहती रही सहर्ष वो

भोजन दिया, जीवन दिया
उसका ऋण अभी तो शेष है।

हो गए शहीद जो
सपूत मातृभूमि के
आजाद सांसें दे गए
खुद को किया कुर्बान है,

है कृतज्ञता पूरी नहीं
उनका ऋण अभी तो शेष है।
ऋण अभी तो शेष है।।

डॉ. स्नेह गौर
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 2 वास्को गोवा

40
साधना कठिन हो तो

कौन कहता है काम कठिन होता है
कठिन होती है साधना

साधना कठिन हो तो
असाध्य को भी साधा जा सकता है
'पार्थ' ही मछली की आँख भेद पाता है।

और नियत नेक हो तो
खुदा भी सजदा करता है
हँसते–हँसते तीनों लोक अर्पित करता है।

साधना कठिन हो और नियत नेक हो
तो मुर्दे में भी जान आ जाती है
तभी तो सावित्री सत्यवान को पा जाती है।

डॉ. शुभ नारायण सिंह
पी.जी.टी. (हिन्दी)
डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय विद्यालय राष्ट्रपति भवन,
नई दिल्ली

41
क्योंकि तुम रोशनी हो

अंधेरे से मत डरो,
क्योंकि तुम रोशनी हो,

जुगनू ही सही,
तुम आस हो, विश्वास हो,
वक्त की तलाश में,
जो अंधेरे की ओट ढूंढते हैं
उस अंधेरे की क्या औकात!
जो उलझ सकें तुमसे,
अस्तित्व ही नहीं, जिनका
क्योंकि, तुम रोशनी हो।

दीपक ही सही,
जो जले अविरल,
स्व–प्रस्फुटित,
जो करे आलोकित,
पथ को,
जग को
क्योंकि तुम रोशनी हो।

घुप अंधेरे में भी, मीलों दूर से
जो दे अपने अस्तित्त्व का एहसास
जो करे,
पथ प्रदर्शन
क्योंकि तुम वो रोशनी हो।

निशा का पहर हो,
या तिमिर का कहर हो,
अनिल के उन्मादित झोंके से भी,
जो ना बुझे,
तुम वो विश्वास हो
उजाला और उल्लास की आस हो,
क्योंकि तुम रोशनी हो
क्योंकि तुम रोशनी हो!

भीम कुमार
अनुभाग अधिकारी
केन्द्रीय विद्यालय संगठन क्षेत्रीय कार्यालय, पटना

42
गौरव गाथा

उन्नीस सौ तिरसठ में जला एक दीप,
ज्ञान जगत को जिसने किया प्रदीप्त।

शिक्षा के नए सोपान गढ़े हैं जिसने,
रचे इतिहास के अध्याय न जाने कितने?

भारत के अखंड गौरव की रची जिसने गाथा है,
खेल, भाषा, गणित और विज्ञान से जिसका नाता है।

काठमांडू, मास्को और तेहरान में छोड़ी एक छाप है,
ज्ञान के पखावज पर जो देता नित – नई थाप है।

तक्षशिला और नालंदा का दोहराया इतिहास है,
भारत के भविष्य को देता गति और विकास है।

एक मुख्यालय, पाँच जीट, पच्चीस संभाग हैं,
बारह सौ अढ़तालीस विद्यालयों का अदभुत ये विभाग है।

सांदीपनी के वंशज जिसमें कई हजार हैं,
बहाते ज्ञान की गंगा और लाते बहार हैं।

तेरह लाख पुष्पों से सज्जित इसकी शाखाएँ हैं,
चारों दिशाओं में फहराती कीर्ति पताकाएँ है।

कला, संस्कृति और कौशल का करता जो सुगठन है,
ऐसा अनोखा, अनूठा केन्द्रीय विद्यालय संगठन है।

विवेक नीमा
मुख्याध्यापक
केन्द्रीय विद्यालय देवास

43
जन–गण– मन फिर गाएंगे

अंधकार, छाया सन्नाटा, बंद हुआ है आना–जाना
मन का दीपक बुझता जाता, मंजिल का है नहीं ठिकाना।
माना– सच, पर धीरज रखना, उम्मीदों के संग–संग चलना
आशा के जब दीप जलेंगे, तभी तमस के प्राण हरेंगे।
आहों को भी राह मिलेगी, आँसू की भी दाल गलेगी
गले मिलेंगी उत्सुक बाँहें ,अपनाएँगी भटकी राहें।
अवरोधों से मत चकराना, बाधाओं से मत घबराना,
सुख–दुख आना जाना है, कहता यही जमाना है।
लक्ष्य न धूमिल होने पाए, आँधी आए बादल छाए,
मिलेगी तुमको मंजिल कोई, हाथ थाम ,मुसकाती खोई।
यह जाएगा कोविड कराल, मिट जाएंगे मन के मलाल,
बंद द्वार खुल जाएंगे, जन–गण–मन फिर गाएंगे।

अयोध्या प्रसाद द्विवेदी
स्नातकोत्तर शिक्षक–हिंदी
केंद्रीय विद्यालय कोलीवाड़ा

44
जल सा जीवन

बारिश सागर बादल नदियां
सब मिलकर कुछ राज कह दिया
आया सावन खुशियां आई
हरियाली ने फिर ली अंगड़ाई
नभ से मोती जैसी बूंदें
धरती पर आकर टकराई
मोर पपीहा कोयल गादूर
सबने मिलकर सोहर गाई
भरें पोखर झील तलैया
जैसे गोदी में ले बैठी मैया
पूरबी बयारों के झोकों ने
थपक–थपक पालना झुलाई
आया मौसम बरसात का
जवानी सी उमड़ी नदियां
फिर अपना कहर बरसायी
घर नगर बरबाद हो गये
जीवन पर आफत बन आयी
बदला मौसम बदले नजारे
बुढ़ापे सा शांत हो ये जल भी
चला नदियों संग जीवन पथ पर
सिंचा जीवन और प्यास बुझाई
अंत समय सागर में गिरकर
चिरनिद्रा सी शान्ति पाई
फिर–फिर बादल फिर–फिर बारिश
जीवन का यह मर्म है भाई।

राम निवास यादव
कनिष्ठ सचिवाल सहायक
केंद्रीय विद्यालय विरमगाम

45
तो कुछ और बात होती

यूं तो जिंदा है हर आदमी इस शहर में
लेकिन सुकून से जिया जाए,
तो कुछ और बात होती।।

यूं तो अजनबी हैं सभी
जिंदगी के मोड़ पर,
फिर भी बेचैन है मन
इक मुद्दत से,
काश दोस्त बन कर रहते तो
नई शुरुआत होती
तो कुछ और बात होती।।

क्यों दूसरों की गलतियों को
खोजते हो तुम
क्यों व्यर्थ की बातों से नाता जोड़ते हो तुम
चैन से सो पाता हर शख्स
काश ऐसी भी कोई रात होती

तो कुछ और बात होती
तो कुछ और बात होती।।

अनुराधा शर्मा
पी आर टी (संगीत)
केन्द्रीय विद्यालय सैक्टर–22, रोहिणी दिल्ली

46
ना संघर्ष से तुम घबराना

उमंग हो पढ़ने का
उत्साह हो नए ढंग से जीने का।
यह क्षण है लड़ने का
मन सबल कर आगे बढ़ने का।।

दूर हो तुम शिक्षा के मंदिर से
फिर भी आस्था मन में जगाए रखना।
होगा नया सवेरा एक दिन
यह विश्वास मन में बसाए रखना।।

जानता हूँ आसान नहीं है डगर
फिर भी मंजिल तक है पहुँचना।
ना संघर्ष से तुम घबराना
न ऊँचाईयों को देख लड़खड़ाना।।

आओ कुछ नया सीखते हैं
कुछ नया सिखाते हैं।
गति कभी तेज हो
कभी धीमी ही सही।।

तराश कर कौशल को
चलो एक नया मुकाम बनाते हैं।

है पूरा विश्वास मुझे
वह दिन फिर लौटकर आएगा।
निपुणता से जुड़ेगा हर क्षण विलंब का
परिश्रम से निखरेगा व्यक्तित्व सभी का।

राहुल देव
प्राचार्य ग्रेड – II
केंद्रीय विद्यालय सरायपाली

47
तेरे सृजन के आगे

तेरे सर्जन के आगे मन निशब्द हो जाता है
जब वह पूनम का चांद पहाड़ के पीछे नजर आता है।
जब शाम की हवा मंद–मंद चलती है
ऐसा लगता है, बस मुझसे बातें करती है।
जब वह मोर पीहू–पीहू गाता है
मेरे गांव, मेरे बचपन की याद दिलाता है।
वह कोयल जब मीठा गाना गाती है।
तेरे होने का एहसास कराती है।
मेरे घर के आगे वह मोगरे की बेल
जब खुशबू फैलाती है
जीवन की सुंदरता के चार चांद लगाती है।
वो आसमान नीला और जब कभी लाल हो जाता है
जीवन में रंगों का एक नया एहसास कराता है।
पेड़ और उसका हर पत्ता सर्वस्व समर्पण का अर्थ समझाता है।
और फिर मन निशब्द हो जाता है।
सूरज और उसके सुनहरे तार
मन को सहलाते हैं, जीवन ऊर्जा दे जाते हैं।
मिट्टी की वो सौंधी खुशबू बच्चों की वह मासूम हंसी
मन सब पर न्यौछावर हो जाता है।
तुझे ढूंढने कहां जाऊं और क्यों जाऊं
जब हर शय में तू नजर आता है।
जी लो, जीने दो और जीना सिखा दो
यही संदेश फैलाता है।
तेरे सृजन के आगे मन निशब्द हो जाता है।

निर्मला बुडानिया
प्राचार्या
केंद्रीय विद्यालय रघुनाथपुरा

48
मेरी असफलता

हर बार लगी असफलता ही हाथ
पर शक्ति रही बरकरार।

कई बार इम्तिहान दिया
पर हर बार मिली असफलता ही हाथ।
जीवन में असफलताओं ने आ डेरा डाला
पर मैंने भी जीवन में
सफल होने का ठाना,
हर बार असफल होने पर भी
एक आशा की शक्ति रही बरकरार।
सबने कहा कि रखी रहती है
आँखों पर तेरे ये किताब
जो आँखों से कभी न हटती
और लगती असफलता ही हाथ।

हर बार लगी असफलता ही हाथ
पर शक्ति रही बरकरार।
सबकी सुनकर मैंने भी हार न मानी
और मन में यही ठानी कि
अब निराशावादी बनना छोड़
कर कर्म पर विश्वास।
आशा की एक किरण अब भी
रह गयी थी बरकरार
कि होगी तू जल्द पास।

हर बार लगी असफलता ही हाथ
पर शक्ति रही बरकरार।
मन की अंतर्मन की आवाज
करती यही पुकार कि
होगी तू पास इस बार
फिर इस अंतर्मन की शक्ति ने भी
यही ठाना कि
रह गयी कमी इस बार
उसे करना है तुझे उस बार।

हर बार लगी असफलता ही हाथ
पर शक्ति रही बरकरार।

प्रियंका शर्मा
टीजीटी (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 1 तिरुचिरापल्ली

49
बढ़ती जनसंख्या

विवश हो गई दुनिया मेरी,
जीवन हो गया दुर्लभ।
एक कमाए चौदह खाए,
दुःखी हैं भैया बल्लभ।

हर रोज बढ़ रही आबादी,
घटती सारी सुविधाएं।
लाचार हो गए युवा हमारे,
सामने खड़ी हैं दुविधाएं।

चहुं ओर भुखमरी बीमारी,
चिंता हर घर जन को है।
कहां से लाऊँ राशन पानी,
दर्द यहां हर मन को है।

अब तो जागो प्रकृति बचाओ,
यह सबकी जिम्मेदारी है।
पेड़, पानी, खनिज,तेल बचाएँ,
इसी में समझदारी है।

हम दो हैं जी दो रहें हमारे,
हो गए मिलके चार।
इससे अधिक बढ़ाएंगे तो,
नर्क होगा संसार।

कृष्णावती कुमारी
संगीत शिक्षिका
केन्द्रीय विद्यालय राउरकेला

50
बहार

बहार, अनमनी,अलसायी धूप के कनेर पर्णो से;
झीनी– झीनी झर रही है।
कपोलो पर किसी नेही की स्नेहसिक्त थपकी सी पवनय
हौले से स्पर्श में लरजती है।
झरते पत्तों वाले पेड़ की छाँव;
किसी देवालय से उठती आत्मिक सुगंध सी सर्वत्र विद्यमान है।
अलसायी, हुलसायी फाग किसी उन्माद सी, नस– नस में बहती सी चस्पां है।
काकुल का कलरव और मयूर की व्यग्र पुकार,
नेह रन्जित धमनियों में हूंकती सी, कूकती है।
किसी मादक वनकन्या की साँवली, सुचिक्कङ चिबुक पर लगा त्रिबिन्द
गोदनाय प्रियतम से अभिसार को भरमाता है।
चहुं ओर पल्लवित विविध वर्णी पुष्पों के कुंज,
रूद्र–रुद्राणी की नेहशैया से सर्वत्र प्रसारित है।
हां रे! अंतर्मन यह बसंत है!

अर्चना नेमा
टीजीटी (कला)
केंद्रीय विद्यालय सीएमएम जबलपुर

51
बिन पानी सब सून

जल जल गया
भूतल का ही नहीं, अंतर्गत का भी
जल निकल गया
जीवन को कर विकल, अविकल
जल जल गया।

मिथिला एक आदि जनपद
पद–पद पर थे कभी जहां
सुशोभित बाग औ' तालाब
बस स्मृतियों में ही है शेष मिठास
पर जल के अभाव में अब यहाँ
जीवन लगता बस परिताप!

पेड़–पौधे, सरि–सरिता, तड़ाग
गए सब सूख, प्यासे हैं सब
लिए बाल्टी, गगरी, तसले
आधे भोर से ये कहाँ जमे हैं सब!

महाकवि भी क्या भटका होगा
शब्दों के लिए,
पानी के लिए
जैसे भटक रहे हैं लोग!

सिंधु–सभ्यता का अतीत
कहती हैं जो प्रश्न कथाएँ
हठी–स्वार्थी घोर मनुज
समझे उसे सिर्फ पढ़ने की बातें।

जिस निधि के संचय में था
लगा प्रकृति को लाखों साल
उसे उड़ाया जिस बेफिक्री से
समझे थे क्या बाप का माल!

कह गए रहिमन पानी राखिए
बिन पानी सब सून ,
पढ़ा बार–बार – 'जल ही जीवन है'
फिर भी नहीं धरा किसी ने कान!

पंकज कुमार
प्र.स्ना.शि.(हिन्दी),
केन्द्रीय विद्यालय क्र.2 वायुसेना स्थल,
दरभंगा

52
मत हार तू हिम्मत रख

मत हार तू हिम्मत रख, मन में विश्वास जगा।
होती ना कभी रातें ये इतनी घनेरी
कि सूरज की किरणों को बाँध सकें।
होता ना कभी भी अँधेरा इतना घना
कि उजाले को चमकने से रोक सके।
होती ना अमावस में इतनी कालिमा
कि चाँदनी को बिखरने से रोक सके।
मत हार तू हिम्मत रख, मन में विश्वास जगा।
चिड़िया तिनका–तिनका ले उड़ती है
अपना नीड़ भी खुद निर्मित करती है।
कभी न आँधी–तूफानों से घबराती है
चींटी भी अपने भार को खुद ढोती है।
बार–बार वह गिरती और सँभलती है
पर कभी ना अपनी हिम्मत खोती है।
मत हार तू हिम्मत रख, मन में विश्वास जगा।
ए राही! तू भी जीवन की कश्ती पार लगा
कभी ना घबरा, तू साहस की पतवार बना।
उम्मीदों के दामन में आशा के दीप जला
मन में भी अपने विश्वास की ज्योति जगा।
जीवन के पथ में हिम्मत रख, कदम बढ़ा
मंजिल को पाकर सफलता की राह सजा।
मत हार तू हिम्मत रख, मन में विश्वास जगा।

शिम्पी गुप्ता
स्नातकोत्तर शिक्षिका, हिन्दी
केन्द्रीय विद्यालय सिवनी मालवा

53
मानवता के प्रहरी

वह सूर्य हो तुम जो ढला नहीं,
जो समय की चाल से छला नहीं,
टूटती सत्य श्रृंखला नहीं,
कभी दिन में अंधेरा पला नहीं!

तुमको भानु सा रहना है,
कहीं डूबा, कहीं और निकलना है,
कोई धूप नहीं, कोई छांव नहीं,
कोई घर, कबीला, गांव नहीं,
हवा का कहां कोई ठौर है,
जो रुका है वो कोई और है!
तुम मानवता के प्रहरी हो,
तुम भोर किरण सुनहरी हो,
परवाह नहीं, रात स्याह गहरी हो,
एक दीप अभी तक बुझा नहीं,
अवसाद तिमिर अभी गया नहीं!

उठा तूफान जहां, तुम्हें जाना है,
वही प्रारब्ध, वही ठिकाना है,
गीत नवल क्रांति का गाना है,
नित सृजन सपन सजाना है,
जब तक अमृत, मंथन से मिला नहीं,
कोई पीठ न ठोके गिला नहीं,
जो समय की चाल से छला नहीं,
वो सूर्य हो तुम जो ढला नहीं।

पूजा श्रीवास्तव
प्राचार्य
केंद्रीय विद्यालय महू (म.प्र.)

54
मासूमियत भरे मुखौटे

लादे फिर रहा हूँ, मुखौटे अनेक,
बदलता हूँ, मासूमियत भरी
सतर्कता से,
फितरत देखकर चेहरे की।
मेरे मित्र, तुम हो, कि कभी भी,
तरक्की नहीं कर सके।
बचपन से आज, बुढ़ापे की
दहलीज तक,
वही रोनी सी सूरत बेचारगी से
भरी।
सपाट चेहरे की,
नहीं बदली स्याही,
दंग हूँ तुम्हारी जीवनशैली से,
कभी तो बदलो।
आदर्श, दिखाने के लिए होते हैं,
और तुम ओढ़े फिर रहे हो !
मुझे देखो,
किस तरह दिमाग में बौद्धिकता का
कीड़ा पाल रखा है।
मैं, बेवजह की आलोचनाओं में
पारंगत हूँ।
तुम वहीं सटीक सरल घिसे–पिटे
रह गए।
मुझे देखो,
जितनी ज्यादा अपनों से ईर्ष्या
करी,
उतनी तरक्की पाई।
समय पर मुखौटा बदला,
तुम नहीं समझोगे!
चालाकी और धूर्तता का मजा ही
क्या होता है।
हम चरितार्थ करते हैं,
'थोथा चना बाजे घना'
और तुम आज तक,
गेहूँ में लगे घुन की तरह बोरी की
दीवार पर चिपक कर जी रहे हो!
कभी तो सीखो, इंसानों से नहीं
तो,
पशु पक्षी, कीड़े–मकोड़ों से सीखो!
तुम आज तक भी मेरा असली रंग
समझ नहीं पाए।
किस तरह तुम्हारी बाँहों में लिपटा,
रंग बदलता रहा हूँ, मैं!
तुम केंचुए की भांति,
आदर्श की मिट्टी में रेंगते रहे।
पता चला तुमको कब?
तुम्हारी पीठ पर पाँव रखकर,
तरक्की करता गया?
तुम देखते रहे,
पहचान ना पाए।

और तुम कहते हो!
सब मुझ से सीखा है!
बताओ?
सुनो मेरे दोस्त!
तुम्हारी चालाकी,
तुम्हारी धूर्तता,
तुम्हारी आँखों से
छलकती थी।
और अभी भी झलकते हैं,
तुम्हारे इरादे,
तुम्हारे मक्कारी भरे भावों में।
तुम कभी ना जान पाए,
मैं तुम्हारे हर कदम,
हर चाल को,
समझता था।
बस, बस बचता था,
कहीं तुम्हारे जैसा,
ना बन जाऊँ।
इसलिए सदैव तुम्हें,
आईने की तरह,
अपने साथ रखा।
तुम्हारे मुखौटों के परिणाम
देखता था,
हमेशा तुमको कदमों में,
और नजरों में गिरा पाया,
तुमको बहुत बार उठाया।
व्यर्थ हर बार,
एक भार मित्रता का नजर आया।
फिर भी उठाया,
यह सोच कर,
कभी तो एक दिन,
इंसान बन कर जीओगे.
और ये मासूमियत से भरे मुखौटे
बदलना छोड़ोगे!

किशोर कुमार
प्राचार्य
केंद्रीय विद्यालय क्रमांक–2
वास्को दा गामा

55
मेरा अंदाज ए बयां लोगों को खलता है

मेरा अंदाज ए बयां लोगों को खलता है
क्योंकि मेरा चिराग हवा के खिलाफ जलता है।।
सीखा नहीं बुराई के सामने झुकना कभी
शायद इसलिए लोगों की नफरतें सहता हूँ।
कर लो कितनी भी कोशिशें दबाने की
पर मैं नदी की तरह उफनता रहता हूँ।।
जीना है तो जमाने के साथ चलना सीखो
होगा सफर आसां ये अक्सर सुनता रहता हूँ।
पर मेरे खून में उबाल अब भी बाकी है
तभी तलवार की धार–सा तीखा रहता हूँ।।
सफर आसां हो तो जीने का मजा ही क्या
मार्ग की मुश्किलों को बेफिक्री से सहता हूँ।
पाँव से पेट ढकना सीखा नहीं कभी
मेहनत की कलम से किस्मत लिखता रहता हूँ।।
मेरा अंदाज ए बयां लोगों को खलता है
क्योंकि मेरा चिराग हवा के खिलाफ जलता है।।

मुकेश कुमार
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय से.4 आर के पुरम, नई दिल्ली

56
मृत्यु जीवन का अंत नहीं है

मेरे पैर के अंगूठे का
टूटा–फटा और उखड़ा हुआ
नाखून,
सिर उठाकर
फिर उतर आया है
जीवन के मैदान में,
जिरह–बख्तर पहनकर।
किसी जिद्दी–घायल–योद्धा की
तरह
फिर है तैयार वह
जमाने की ठोकरें–खाने के लिए
पंद्रह दिनों के बाद।
पैर के अंगूठे का नाखून
अच्छी तरह जानता है कि
ठोकरें झेलना उसकी नियति भी है,
और चुनौती भी।
इन्हीं ठोकरों से मिलेंगे
वे अमूल्य अनुभव
जो काम आएंगे भविष्य के,
जिनसे प्रेरित होंगी
नयी जिंदगियाँ।
अंगूठे का नाखून जानता है,
फीनिक्स पक्षी की कथा
जो हो जाता है प्रगट
अपनी चिता की राख से
और देता है चुनौतियाँ
हर चुनौती को।
उसे मालूम है मृत्यु जीवन का अंत
नहीं है।

हेमचन्द राय
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 1 एसटीसी
जबलपुर (म.प्र.)

57
मैं और तुम

दिल और दिमाग, मन और मस्तिष्क,
एक ही देह में होते हुए भी कितने जुदा–जुदा हैं।
जैसे–'मैं और तुम'।
मैं भावनाओं में डूबी हुई,
तुम ज्ञान से उबरे हुए,
मन इच्छाओं के वितान में उड़ता हुआ,
मस्तिष्क धरातल पर अडिग– सधा हुआ,
दिल स्वप्न लोक में भ्रमित,
दिमाग अर्जुन सा केंद्रित।
मैं झूठे सपनों में सुप्त,
तुम वास्तविकता में जागृत,
मन अपनी धुन में मगन,
मस्तिष्क पूरे होशो हवास में,
दिल असंभव की चाहत में,
दिमाग योजनाबद्ध राहत में।
लेकिन 'मैं' ने 'तुम' से समझौता कर लिया,
दिल ने दिमाग के सामने घुटने टेक दिए,
मन को मार कर मस्तिष्क विजयी हुआ,
और 'मैं' और 'तुम' जुदा हो गए।

श्रद्धा चौहान
पी. जी. टी (इतिहास)
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2 आयुध निर्माणी देहुरोड, पुणे

58
मैं 'कमल'

मैं 'कमल'
'नलिनी'
'जलसुता'
सरवर की गोद में पली
सूरज की किरणों में नहाकर निखरी
नाजुक पाती सी हथेलियों में तुहिन बिन्दुओं को सजा
अपनी मृणाल बाँहों को फैला, लहरों से की अठखेलियाँ
उषा की लालिमा पा 'अरविंद' बन गई
धवल चंद्रकिरणों का श्रृंगार कर 'पुंडरीक' कहलाई
मेरे उर की सुरभि से सुरभित संसार हुआ
मेरे रूप–रंग का गीत भँवरों ने भी गाया
गुन–गुन का गुंजार सुन झूमी, लजाई
अहा मेरा जीवन
बना सुंदर उपवन।
कहीं आसीन हो कमल पर, धन बरसाए कमला
कहीं नीलकमलों से श्रीराम करें शक्तिपूजा
सप्तसुर वीणा के सुनाए श्वेत पद्मासना शारदा
धन्य मेरा जीवन
बना दिव्य पूजन।
मैं 'नीरजा' मैं 'वारिजा'
मेरे 'अरविंद' आनन ने ममता का आँचल भिगोया
मेरे कमल नयनों ने जग का मन मोहा
मेरे चरणकमलों में भक्त हृदय नत हुआ
कवियों की लेखनी ने उपमान मुझे बनाया
वाङ्मय सारा, देखो कमलमय हुआ

पूजन में मैं,
वन्दन में मैं
चिन्तन में मैं
और लेखन में मैं
जीवन के हर स्पन्दन में मैं,
जल से आप्यायित फिर भी निर्लिप्त काया
पंक में भी रहकर तभी पावन प्रेम पाया।
मैं कोमल 'कमल'
'नलिनी'
'जलसुता' 'पंकजा'
प्रतीक बनी पावनता की
हर्ष की, पावन स्पर्श की
सत्यता की, सुंदरता की।
धन्य मेरा जीवन
नित नवीन सृजन।

कमला निखुर्पा
प्राचार्या
केन्द्रीय विद्यालय पिथौरागढ़

59
विनती

हे परमेश्वर, कालचक्र की
गति को रोको, बहुत हुआ।
प्रलय मचाती इन लहरों को,
अब तो रोको बहुत हुआ।
थकी लेखनी, श्रद्धांजलि देते–देते बेहाल हुई,
शब्द हुए निष्प्राण सभी के,
विनती अस्वीकार हुई
अश्कों की इस बाढ़ को रोको,
दिखता है बस धुँआ–धुँआ
हे परमेश्वर...
आहत मन, सहमी सांसें,
कितनों का संग छोड़ रही।
कैसी कठिन परीक्षा भगवन,
आशा भी मुख मोड़ रही।
व्याकुल मानव की पीड़ा ने,
अब तक तुम को नहीं छुआ।
हे परमेश्वर...
खोलो तीजा नेत्र त्रिलोचन,
वसुधा का क्रंदन सुन लो।
प्रेम सुधा रस बरसाकर इन सांसो में जीवन भर दो।
दया करो, हे दयानिधि प्रभु तांडव रोको बहुत हुआ।
हे परमेश्वर...

उमा उपाध्याय
पुस्तकालयाध्यक्ष
के.वि. क्र. 3 ग्वालियर

60
संकल्प

जीवन पथ पर बढ़ते जाना,
यह संकल्प हमारा है।
न होंगे पथ से विचलित,
लाख मुसीबत आने पर,
आसमाँ को धरती पर लाना
यह संकल्प हमारा है।।

ज्ञान–अर्चना–पूजा से,
मानवता का फूल खिलाएँगे।
रामराज को धरती पर लाना,
यह संकल्प हमारा है।।

योग–तपस्या साधना से,
विकसित हो जन–जीवन
नैतिकता के पथ पर बढ़ना
यह संकल्प हमारा है।

सेवा समर्पण त्यागमय जीवन
चहुदिश हो आत्म–प्रकाश
प्रेम दया का पाठ पढ़ाना
यह संकल्प हमारा है।

शिक्षित हो हर जन–जीवन
तन–मन आत्म प्रकाश हो,
नहीं बटेंगे मानव–मानव
यह संकल्प हमारा है।

आँखों में हो सुखद सपने,
पग प्रगति–पथ पर बढ़ते जाएँ
निज संस्कृति की रक्षा करना
यह संकल्प हमारा है।

श्रद्धा भक्ति हो, विश्वास प्रभु पर
न कभी कुपथ पर जाएँ
जग में देश का मान बढ़ाना
यह संकल्प हमारा है,
यह संकल्प हमारा है।।

दीपिका पाठक
स्नातकोत्तर शिक्षिका (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय नामरूप

61
संगठन की अभिलाषा

मरू को उद्यान कर
अज्ञान तम – तमाम कर
ज्ञान की तू ज्योति थाम
घर से निकल पड़।
न प्रकृति – प्रहार देख
न महामारी की मार देख
स्वयं को तू तैयार कर
राष्ट्र नव निर्माण कर।
श्रेष्ठता के जाप पर
धर्म के उन्माद पर
व्यर्थ के विवाद पर
सत्य को आत्मसात कर
तू सृजन संवाद कर।
है कठिन, डगर मगर
संकल्प ले, हो निडर।
निराश की तू आस है
ज्ञान का तू प्रकाश है
तू व्यक्ति नहीं विचार है
तू ऊर्जा का संचार है
प्रेम का तू पुंज है
ज्ञान का तू कुंज है
अनर्थ को तू अर्थ कर
असमर्थ को तू समर्थ कर।
मरू को उद्यान कर
अज्ञान तम – तमाम कर
ज्ञान की तू ज्योति थाम
घर से तू निकल पड़।

रोहित
प्राथमिक शिक्षक
केन्द्रीय विद्यालय चौरई

62
स्मृति-छांव

उस चिलबिल पेड़ की छावन में
सखियों के मन के प्रांगण में
भरी दुपहर पलते थे
कितने सपने उस आंगन में।

कभी झूले पर, कभी पेड़ पर,
बातों में वक्त सरकता था
कभी किताब, कभी पन्नों पर
स्याही का रंग बिखरता था।

उस एक वृक्ष के साये में
कितने अरमान मचलते थे
हंसता बचपन, खिलता यौवन,
नित नई पींगे भरते थे।

वक्त बड़ा बलवान, जिसने
दूर किनारों पर ला पटका
किंतु सखियों का मन तब भी
उस चिलबिल पेड़ पर अटका।

उस घनी छांव के स्थान पर
अब बुलंद इमारत है हंसती,
पर झूले, पंछी, सपने, आँखें,
उसी मंजर को तरसती।

उस अभिन्न सखी की याद में
एक अभिनव पौधा रोपा जाए
फिर कोई आंगन, फिर कोई छावन,
नव पल्लवों को सौंपा जाए।

हर आंगन में गुंजन हो
हर डाल पर हो हलचल
पंछी, बालक, हर सखा मनाए
मधुर कलरव कोलाहल।

आकांक्षा सेम्युएल
प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय क्रं. 2 जीसीएफ,
जबलपुर

63
स्वयं करना पड़ता है

कुछ कार्य ऐसे होते हैं,
जिन्हें स्वयं करना पड़ता है।
तैरना यदि सीखना है तो
नदी में उतरना पड़ता है।
बुभुक्षा शमित नहीं होती
मात्र भोजन के दर्शन से।
अग्नि पैदा नहीं होती है
बिना परस्पर संघर्षण से।
जिह्वा पर जहर गुदवाने से
भला कभी कोई मरता है.
मरना यदि कोई चाहे तो
गरल–पान करना पड़ता है।

सुन्दर सुघर शरीर यदि चाहे
व्यायाम करना पड़ता है।
श्रम करने से यदि क्लान्ति हो
तो विश्राम करना पड़ता है।
जीवन का आनन्द लेना है
तो स्वयं ही जीना होता है।
नीलकण्ठ–सा पूज्य होना है
परपीर–गरल पीना होता है।
सूरज–सा चमकना है अगर
सूरज–सा जलना पड़ता है।
ज्ञान–प्रत्याशी निरायास ही
सुविज्ञ नहीं होता, तपना पड़ता है।

डॉ. रामप्रसाद पाण्डेय
टीजीटी (संस्कृत)
केन्द्रीय विद्यालय, सेक्टर– 5 द्वारका, दिल्ली

64
तू चल

तू रुक मत, तू चल! तू चल!
समय परिवर्तित है, बदलता वक्त हर पल,
भरोसा खुद के आत्मबल पर कर
मेहनत को अपने साथ में लेकर,
तू रूक मत, तू चल!

लोगों के तानों को सुन, संशय तू खुद पे न कर
हिमालय से अडिग स्वाभिमान है तेरा,
तूफानों की तू परवाह न कर
तू रूक मत, तू चल!

बाधाएं आने पर हँसकर, मुश्किलों से कर दोस्ती
अगर जमीं बंद करे राह तेरी
तू असमाँ का रुख कर
तू रूक मत, तू चल!

निराशाओं को भूल, दुःख से लड़ने की बारी है
जला हिम्मत की मशाल अब,
भय को जलाने की बारी है
तू रूक मत, तू चल!

सोनी मौर्या
प्र. स्नातक शिक्षिका (विज्ञान)
के.वि एन.एफ.रेलवे रंगिया, असम

65
अफवाह

अफवाह है एक ऐसा जहर
जो शुरूआती दौर में धीरे
बाद में तेजी से फैलता है।
अफवाह साबित करती है
सच को झूठ और
झूठ को सच में।
यह उड़ती है पूरे शहर में
तिल का ताड़–सा बनता है।
मचती है इससे भगदड़
रौंदता है एक–दूसरे को मानव।
अफवाह दिलाती कभी झूठा सम्मान
तो यह कभी जान की प्यासी होती है।
अफवाह से पैदा होता है
मानव का मानव के प्रति द्वेष भाव।
पनपता है नफरत का बीज,
जिससे खोखली होती है–
मानव की बुनियादी धारणाएं।
अफवाहों से कितने ही
सच बेघर हुए।
न जाने कितने शासन बदल गए।
रह गया मानव सत्य ढूँढता
सत्य को कलंक का
सेहरा पहना दिया।
अफवाहों से उजड़ते हैं
न जाने कितने शहर।
कितनी ही बस्तियाँ
खाक हो गयी।
अफवाह है वो ताना–बाना
जिसमें मानव का नजरिया
उलझता ही चला गया।
फिर भी शेष है तो
सिर्फ अफवाह!

नरेंद्र कुमार रैसवाल
(प्राथमिक शिक्षक)
केन्द्रीय विद्यालय उदालगुडी असम

66
भारत की तसवीर हूँ

मैं भारत का भविष्य हूँ
मैं भारत का अभिमान हूँ,
तू जो हर रोज करता रहा है
हाँ, मैं वही अपमान हूँ।

जो तू कभी न कर सका
हाँ, मैं वही सम्मान हूँ,
जरा इतिहास के पन्ने पलट कर तो देख
अतीत से लेकर भविष्य तक
मैं भारत की शान हूँ।

मैं उन वीरों की दुहिता हूँ जो
फाँसी पर झूल गए,
मैं उन शेरों की माता हूँ जो
युद्ध–भूमि में जूझ गए।

मैं झाँसी की रानी, पन्ना जैसी वीर हूँ
मेरा परिचय इतना,
मैं बदलते भारत की तसवीर हूँ
मैं भारत की तसवीर हूँ।

प्रदीप कुमार मौर्य
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
के.वि–1 वायुसेना स्थल जोरहाट, असम

67
स्वर्णिम प्रभात

रख हौंसला, बढ़ आगे, कठिनाइयों से साक्षात कर,
चीर कर स्याह रात, स्वर्णिम प्रभात कर।

भर उर में उत्साह, आँखों में ख्वाब ले,
कर शांत चित्त, दृढ़ हस्त का लाभ ले।
यूं ही नहीं मिलता जीवन, बात ये स्वीकार ले,
डूब जाए सूरज अवसर का, ऐसी न रात कर।।

भ्रमर भी मधु नहीं पाता हर एक फूल से,
टूट जाते है कुछ ख्वाब मानवीय भूल से।
है यह अनमोल क्षण, न कर तुलना धूल से,
अब तक जो रहा अज्ञात, उसे तू ज्ञात कर।।

भय का न नाम ले, दामन साहस का थाम ले,
बढ़ता चल पथ पर, मन में हरि का नाम ले।
पस्त होगा यह संकट, सब्र से तू काम ले,
वीर है, न मान हार, काबू में हालात कर।।

माना की दुर्गम है राह, है विपत्तियों का समंदर अथाह,
अगर तुझमे है आत्मबल, और है गहरी चाह।।
कठिन पुरुषार्थ से तो, मुड़ भी जाता है जल प्रवाह,
पहचान अपने आप को, खुद से तो मुलाकात कर।।

रख हौंसला, बढ़ आगे, कठिनाइयों से साक्षात कर,
चीर कर स्याह रात, स्वर्णिम प्रभात कर।

महेश चन्द्र प्रजापत
कनिष्ठ सचिवालय सहायक
केंद्रीय विद्यालय मनमाड

68
मैं नारी हूँ

सूरज की पहली किरण–सी नाजुक,
पानी की नन्हीं बूँद–सी निर्मल,
अग्नि की पावन लौ–सी उज्ज्वल,
हवा की हल्की छुअन–सी चंचल,
मेरी नारी मुझमें जीवित है,
मेरी गरिमा मुझमें संचित है ,
मेरी शक्ति मुझमें निश्चित है
मेरी प्रतिभा जग में अंकित है
मैं लाख नाजुक–सी लगती हूँ,
मैं लाख भावुक–सी दिखती हूँ,
मैं लाख नदी–सी बहती हूँ,
मैं लाख लहर–सी लहकी हूँ,
पर पर्वत–सी अटल खड़ी हूँ मैं,
युगों की प्रताड़नाओं से
युगों की यातनाओं से,
अकेली ही लड़ी हूँ मैं।
कभी बेटी बनके मर्यादा रही,
कभी बहन की लाज निभाई है,
भार्या बन प्रीत की नदी बही,
कभी माँ की ममता लुटाई है,
अगणित रूपों में अगणित बार
मर्यादा, लाज, ममता और प्रेम में
हर बार बलि चढ़ी हूँ मैं,
न हारूँगी, ना हारी हूँ ,
सबल सशक्त मैं नारी हूँ,
हर चुनौती की, हर संकट की
चट्टान चीरकर हरदम ही,
बस आगे बढ़ी हूँ मैं।

हाँ अकेली लड़ी हूँ मैं,
मर्यादा के नाम भले ही,
हर बार बलि चढ़ी हूँ मैं
पर पर्वत–सी अटल खड़ी हूँ मैं
चट्टानों को चीरकर हरदम,
बस आगे बढ़ी हूँ मैं।

गीता सभरवाल
पी.जी.टी (हिंदी)
के.वि. एन.ए.डी. करंजा, मुम्बई

69
कारगिल दिवस

दिवस वही, जो पुलकित कर दे
हर्षाये मन को प्रतिपल।
या भर दे दुःख सा मन में
यह सोच, ऐसा हुआ क्या कल?
दुविधा ये है, मेरे लिए
हर्षाऊँ, खुशियाँ मनाऊँ।
या फिर करुणा से भर लूँ यह दिल
प्राप्त हुआ जो बलिदानों से, अपनाऊँ कैसे कारगिल।।

कल हुआ वही अन्याय, वही संग्राम
जिसको कर निस्तारित, दिया था पूर्ण विराम।
दोहराया फिर पाक, तुम्हीं ने उस कल को
छेड़ दिया तुमने, हृदय इस अविचल को।।
जो जा बैठा यह कहकर, वसुधा कुटुम्ब हमारी
उसी को छल, खुद तूने ली यह मोल बिमारी।
कर याद जरा उस कल को, जब हुआ, महत् ह्रास था।
फैली पाक में त्रास थी और भारत के हाथ में द्रास था।।

शुरुआत करी थी तुमने
किया अन्त हमारे वीरों ने।
तुमने खोया गद्दारों को,
पर हमने राष्ट्र के वीरों को।।
वीर वही जो राष्ट्र की रक्षा पर दे जाते बलिदान यहाँ।
गद्दार वही जो स्वयं का छोड़, कर जाते मुल्क बदनाम वहाँ।।

देख जरा पीछे मुड़कर, क्या हथियाने को आया था?
लेना था कश्मीर को तूने, पर द्रास भी ले ना पाया था।।
तीन दशक पहले भी तूने, कर ली थी कोशिश पूरी।
लोभ था कश्मीर का तुझको, पर अन्त में इच्छा रही अधूरी।।
उसी अधूरी इच्छा को, शायद पूरा करने आया था।
जहाँ कश्मीर हथिया न सका, खुद का लाहौर गँवाया था।।
रही अधूरी इच्छा फिर से, हाथ लगा न हिस्सा कोई।
खुद के जन को खोकर भी तुमने, अश्रु धारा भी ना छलकाई।।

पर कैसे भूलूँ मैं उनको, जिनके बल पर निर्भीक हुआ हूँ।
स्वतंत्र रहा, स्वतंत्र रहूंगा, उनसे ही तो सीख रहा हूँ।।
हाँ, अब खुशियाँ ही मनाऊँगा, पत्थर सा करके यह दिल।

हुआ विजय भारत था उस पल, हासिल हुआ फिर कारगिल।।
नमन है वीरों, तुमको प्रतिपल
शौर्य प्रदर्शित करने पर।
भारत माँ की रक्षा हेतु
स्वयं को अर्पित करने पर।।

राकेश कुमार झा
प्रशि.स्ना.शि. – (संस्कृत)
केन्द्रीय विद्यालय नाभा छावनी

70
उम्मीद की किरण

कठिन समय है मगर हौसला ज़रूरी है
हवा के ज़ोर पे जलता दीया ज़रूरी है

हमारे देश के बच्चों का हो भविष्य उज्ज्वल
सभी के होठों पे यारों दुआ ज़रूरी है

हर एक दौर में हम होंगे कामयाब सदा
लगन का मेहनत का बस सिलसिला ज़रूरी है

हमीं बनाएँ पर्वत पहाड़ में रास्ते
जिगर में जान तो दिल में खुदा ज़रूरी है

बहारें आएँगी फिर से खिलेंगे फूल यहाँ
हर एक दिल में मगर आस्था ज़रूरी है

हमारे फूल से बच्चों में मुस्कुराहट हो
कुछ ऐसा काम हो कुछ तो नया ज़रूरी है

हमारे देश के बच्चे करें ये जग रोशन
हमारे दिल को यही आसरा ज़रूरी है

सभी के हाथों में पुस्तक रहे सदा काशिफ
अब ऐसे लक्ष्य को पाना ज़रा ज़रूरी है

काशिफ अहसन
स्नातकोत्तर शिक्षक (अर्थशास्त्र)
केंद्रीय विद्यालय एन.टी.पी.सी. दिबियापुर

71
हौसला

हो बेखौफ लहरों से लगाए जिसने भी गोते
मिले हैं उनको ही मोती बाकी रह गए रोते।

जीत के हैं बड़े मुरीद हमसे वह कहते थे,
आई जूझने की बात तो वो रह गए सोते।

मंजिल आजमाती है सफर में हौसले सबके,
जरा सा सब्र रखते तो हासिल मंसूबे होते।

सुनो अंबेडकर, गांधी और कलाम के किस्से,
कैसे राहों की मुश्किल के उड़ाए आपने तोते।

रखो हर पांव अंगद से बढ़ो मिल्खा की तेजी से,
नहीं हौसलों से ज्यादा मंजिलों के फासले होते।

सनोज कुमार भारती
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (कला)
केंद्रीय विद्यालय मऊ (उ.प्र.)

72
मेरी सोच

कई–कई बार
या यूँ कहें बार–बार
मुझे परेशान करती है मेरी सोच!
पढ़े गये शब्द की सोच
लिखे गये शब्द की सोच
बोले गये शब्द की सोच
सुने गये शब्द की सोच
और इन्हें सोचते–सोचते
मोच खाती
मेरी अपनी सोच
पढ़ा गया सही है?
लिखा गया सही है?
बोला गया सही है?
सुना गया सही है?
और इनके सही में क्या आचरण भी सही है?
यही प्रश्नवाचक शब्द
कई बार मेरे मन मानस में भरते हैं सोच
रात दिन विस्तृत होती हुई मेरी अपनी सोच!

अनुराग पाण्डेय
पी जी टी (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय नं. 1 कैंट शाहजहांपुर

73
एक प्रयास

एक प्रयास तू ऐसा कर,
साफल्य किरण के जैसा कर।

चींटी की सी वह धार चढ़े,
अगम्य शृंग को पार करे।
टिटहरी ने फिर सूखा दिया,
सागर – जल खारा बना दिया।

एक प्रयास तू ऐसा कर

सागर – सलिल की बूंदों – सा,
नक्षत्र स्वाति घनघोर घटा।
सींपी में जाकर बनता है,
मोती मकरंद सुमन जैसा।

एक प्रयास तू ऐसा कर

नीर–क्षीर का वेद पढ़ा,
वो चला राजहंस भेद मिटा।
कलुषता का सम्भार घटा,
रोशन करता श्रुतिसार चला।
एक प्रयास तू ऐसा कर

उस मस्त विहग–सा उड़ता चल,
परवाह न पारावार की कर।

मस्त कोशिशों के पर लेकर,
अनंत गगन को चूमता चल।

एक प्रयास तू ऐसा कर

अकर्मण्यता की व्याध हटा,
जुगनू – सा उड़ता, चलता चल।
उस व्योम के तारक–चंदों को,
चाँदनी धवल दिखलाता चल।
एक प्रयास तू ऐसा कर,
साफल्य किरण के जैसा कर।

मेघा आपटे
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय क्र. 2 रायपुर (छ.ग)

74
पदत्राण

देख कंगूरा इमारत का हर कोई यही सोचता है,
कितनी किस्मत वाला है, हर पल सदा चमकता है।
संघर्षों की बदौलत ही जीवन में सफलता मिलती है,
हर उपलब्धि के पीछे बस त्याग–कथा ही चलती है।
अंबर से लेकर धरती तक, जब सृष्टि का आविर्भाव हुआ,
सुन्दरतम और विवेकी मानव का धरती पर पूर्ण प्रभाव हुआ।
चर–अचर जो भी जीव यहाँ, विवेकी केवल मानव था,
पर वह भी स्वार्थी बन बैठा, ऐसा तो केवल दानव था।
उसकी करतूत देख यहाँ, जब परिवेश हर तरफ खौल उठा,
तब उसको राह दिखाने को, जूता उसका उससे बोल उठा।
जीवन में मुसीबत न आए, सदा प्रयास मैं करता हूँ,
लिए समर्पण भाव सदा, मैं कदम–कदम पर चलता हूँ।
किसकी शख्सियत कैसी है, सदा मैं ही बतलाता हूँ,
दबा रहता हूँ सबसे नीचे, पर खुशियाँ सबको पहुँचाता हूँ।
जब भी कभी मैं टूटा हूँ, प्रेम–तगा ही माँगा हूँ,
प्रेम दिया मुझको जिसने, उसका लक्ष्य मैं साधा हूँ।
तन मैला जो हुआ कभी, कालिख से खुश हो जाता हूँ,
सुख–प्रकाश फैला करके, गम–अंधकार पी जाता हूँ।
तन हो जाए तार–तार, फिर भी न हिम्मत हारा हूँ,
तल्ले–तल्ले पर जोड़–जोड़, करता सदा गुजारा हूँ।
जिसने मेरा कद्र किया, सदा मुझको अपनाया है,
मैंने भी उसकी सेवा में, तन–मन खूब लुटाया है।
बड़े–बड़े जो लोग यहाँ जिनके कल–कारखाने हैं,
सच पूछो तो मेरी बदौलत ही, भरते अपने खजाने हैं।
छोटा–बड़ा न कोई जग में, सब झूठी धौंस दिखाते हैं,

राजा हो या रंक सभी, एक ही मार्ग सब जाते हैं।
जीवन का है सार यही, जो कोई समझ न पाता है,
त्राण–तल जिसने शुद्ध रखा, वह भव–सागर तर जाता है।
त्राण–तल का जिसने प्रतिकार किया, जीवन–समर वह हारा है,
अमीर–गरीब की न चाह मुझे, मुझको तो प्रेमी प्यारा है।
जाति–पाति का भेद नहीं, मैं सबका पग सहलाता हूँ,
समस्या–कंटक से सबको कदम–कदम पर बचाता हूँ।
जो मुझको अपनाता है, सीने पर उसे बिठाता हूँ,
उसके पथ के काँटे चुनकर, सर्वदा साथ निभाता हूँ।
वे मुझ में कील ठोकते हैं मैं उनको लक्ष्य दिखाता हूँ,
उनकी मुश्किल आसान बना, उनको सुख पहुँचाता हूँ।
सर्वदा सबका पदत्राण बनूँ, जीवन–सुखद प्रमाण बनूँ,
सबकी पीड़ा संहार करूँ, हर पल सबका कल्याण करूँ।
सभी इक दूजे के सहायक हों, ये मेरे दिल की आशा है,
निसि–वासर सब खुशहाल रहें, ऐसी मेरी अभिलाषा है।

डॉ. उमाशंकर पाण्डेय
पी.जी.टी. (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय ऑयल, दुलियाजान (असम)

75
शहीद का संवाद

मिट्टी में मिलाकर दानवों को
बचा ले गया मानवों को
हर तरफ खुशी की लहर है
जीत गया भारत
विश्व पटल पर फिर चमक है
कुछ घरों में रोटी
नहीं बनी है आज
जिन सपूतों ने सजाया
भारत का ताज
माँ उनकी खड़ी है चुप चाप
अचानक कमरा खाली–खाली है
हर कोई बेचहरा है
माँ मेरा तुम्हें नमन है
खामोशी पसरी थी
माँ की आँखें लाल हो गई
खामोशी चीरती
माँ की ध्वनि चीख गई
माँ का कोई हिसाब नहीं होता
दुनिया बतलाती है
पुत्रवधू को क्या जवाब दूँ
ये कौन बतलाएगा
उसकी सूनी मांग का
मुझे पुत्र हिसाब दे
देख माँ मेरे सीने पर
ये सितारे अमर हैं
वो पगली है जो कहती है
मैं निष्ठुर धोखेबाज हूँ
मैंने अपनी शीश मातृभूमि को अर्पित की है
और अपने लहू से मैंने उसकी मांग भरी है
इतिहास के पन्नों में माँ मैं अमर रहूँगा
वो सदा सुहागन होगी
बस ये बात खरी है
पुत्रवधू से कह देना
पुत्र भी सीमा पर जाएगा
वो जाएगा वो जाएगा
वो अवश्य ही जाएगा
मेरे शीश का मान हर किसी की खुशी है
जो रूठी है वो, जो रूठी हो तुम
ये बात ठीक नहीं है
जाओ माँ बतला दो दुनिया से कि
मैं आऊँगा!
मैं आऊँगा मैं आऊँगा
मैं अवश्य ही आऊँगा
मैं चलता हूँ माता
पर ये बात स्मरण रहे
मैं मरा नहीं हूँ अमर हुआ हूँ
बस ये बात सहज रहे।

जया नमन
कनिष्ठ सचिवालय सहायक
(सतर्कता अनुभाग)
केंद्रीय विद्यालय संगठन मुख्यालय

76
तन–मन का योग

मेरे देश में जन्मा तू, मेरी मिट्टी मैं बसा तू मेरी मातृभूमि की राह खोज तू
नहीं रही कोई सरहद अब नहीं कोई बंदिशें बन गया है अब पूरे विश्व की सम्पदा तू,
तन तुझसे मन तुझसे ,स्वस्थ जीवन का हर किस्सा तुझसे सदियों से विद्यमान तू भारत भूमि का अहम् हिस्सा तू
तुझसे जीवन की सही दिशा है कुदरत का कोई करिश्मा तू।
मन का योग तन का योग आत्मा का योग करें हम
पंच तत्व से जुड़ कर पंच कषाय दूर करें हम
गहरी सांस में एक नयी ऊर्जा को भीतर ग्रहण करें हम
और गहरी सांस से अंतर्मन के सब द्वन्द बाहर करें हम
तब होगा उत्तम मार्जन सच्चा और बनेगा आर्यावर्त का स्वस्थ हर एक बच्चा
तन के योग से ज्यादा आज मन का योग जरूरी है
है सच्चाई गर प्रत्येक श्वांस में तो मन की हर आशा पूरी है
ब्रह्माण्ड के कण–कण में हो पवित्रता का वास
तुम करो मैं करूँ चलो सब करें मिल कर योगाभ्यास।

ज्योति जैन बिष्ट
प्राथमिक शिक्षक
के.वि. एनएमआर एनसीईआरटी शाखा

77
Wear the Pendent of Independence!

Do you wear the pendent of Independence?
Is it worn with a sense of pride or burden?

For the pendent is subsumed in dependent
And dependent is a part of independent!

So, can we be independent completely?

Web of life tells us that we are inter-dependent
Spiritual Masters tell us that we are independent!

So, what then is correct?

'*Hinsa*' is a concept derived from observation of Nature
But the opposite '*Ahinsa*' is strived to be practiced by Humans!

Similarly,
We are dependents for many things
While we strive hard to be independent!

Where can we be independent?
And for what should we be independent?

Answers to these questions
Shall always guide one towards an ideal life!

Since such questions pop up every now and then
Ability to find answers is the necessity for all!

Thus,
Lifelong Learning is the cherished goal
For which let us '*learn how to learn*'!

In doing so,
Not only can we wear the pendent of Independence
But also lead a life beneficial to everyone!

N R Murali
JC Training
KVS (HQ)

78
Life is beautiful

Dark clouds over your head,
Demons crawling beside your bed,
You feel like you are sinking down,
You are smiling, but inside seem dead.

All the negative thoughts in your brain,
All your sorrow, all your pain,
has made it difficult for you to see
how much strength your mind can contain.

You see, some things are not in our control.
Ignore the small things, look at the picture whole.
Keep moving forward, with your head held high.
You've got a strong resolve and a beautiful soul.

You have got people who love you a lot.
They wanna share your suffering, they're scared not.
Just reach out for them, take a step forward,
and you'll realize how many blessings you have got!

Life is beautiful and short too.
It is lived by all but loved by few,
But in the eyes of the beholder does the beauty lie,
Chin up, dear friend, enjoy the beautiful view!

Rushina Irum
PRT
KV CRPF Rampur

79
It was Her Dream

The little girl ran to school each day,
And coming home she draped herself
In her mother's sequenced saree , warmly
Took a chalk in one hand and a pointer in the other, and acted to her heart's content.
She was now a teacher

Years later she fulfilled her dream,
And became a teacher in Kendriya Vidyalaya

It was a long cherished dream
Filled with happy working hours and loving friends
The long train journeys escorting students,
The hustle and bustle before an inspection
Life will be long and enjoyable and so they dreamt

The vicious virus came on grabbing and pulling into its icy cold deathly embrace
the little girl, the teacher in KVS
And alas she has gone with the wind
Her life cut short by the cruel Corona
Leaving vacuum and pain in many dear hearts,

Her seat in the vidyalaya is empty, but
The echo of her laughter still fills the air and my mind
And I wait at the school gate to listen to the sound of her vehicle

She was my friend and teaching was her dream, her passion
My loving friend Prabha, Parvati and Jaya Kumari
Who still live in my dreams

K.S Soujanya Singh
PGT (English)
KV No.2 Nausenabaugh

80
2020 -The Year of Challenges, or Opportunities?

The COVID-19, though invincible it's been,
"***Evolutionized***" teaching, as never before seen!

When doors to our schools were abruptly shut
Windows opened up for learning, uncut!

These 'peep-holes' threw light, on the story inside
of every boy and girl in our classes, that we guide.

Home visits and parents meet, became informal things,
Guardians watch on, as the teacher sings!

What training and workshops for years tried to do, ***CAL/TAL*** ,
mushroomed amongst the old and the new!

Devices that were caught by the disciplinary squads,
Were recommended by schools, to parents for their wards

When the excitement of the new connect, gradually died,
Many grew restless from both inside and outside.

They missed their PT classes and their friends but stay invisible n quiet,
till the online session ends!

Teachers coaxed them, to speak out their mind,
with talks and discussions, their emotions to find.
'***Manodarpan***' was taken to a splendid new height,
Podcasting stories to make them feel right!

The teacher felt empty ,teaching a full class,
not getting the feedback nor able to 'pass'.
It dawned on the teacher, she was looking for the stimuli,
the rewarding smile and the glitter in their eye!

There had to be a way out, to revive the shine,
with activities in groups of seven or nine.
Peer grouping gave chances to learn and jest, empowering them, to bring out their best!

With **creative tasks** they dug, into their brain ,
as **home- based Projects** were ushered in again!
Rote teaching and spoon feeding lost all its lustre,
Aatmanirbhar self- learners, are what we need to muster!

To Assess or not was not at all an option,
But what and when, and how was the question!
Give them the rubrics and, the key was to trust
Self-assessment with them, you had to entrust!
Knowledge is not information, just to be tested,

Give skills that will ensure that it doesn't get wasted!
The ***AAC*** and ***Nishtha*** brought in more perspectives,
it expanded the scope and use of alternatives!

With new gains came new pains to tackle and deal,
With cyber-spy and intruders, virtual threats became real!
Safety tips from viruses, seen within and out,
Was a priority in the classes, without any doubt!

Self-care and self-awareness reached a new high,
with Food and family, we turned on the inner eye.
Parents assumed new roles, to their wards delight,
as Nature beckoned students, with lessons for life!

And looking at the teacher, in the mirror at my school,
I see the masked image, linked to a smart tool,
broadened senses, to perceive from 'their' space,
And **a mind with a heart**, firmly in place!

It took a microbe to remind me,
that what we need is not teachers nor education that ensures literacy,
but those that sharpen everyone's skillsets!
and most importantly nurtures, an elevated mindset!
Nature the best teacher!
Yet again I have started, to believe in Magic, and I'm reassured of the '***Power within***'!

C K Vedapathi
PGT (Biology)
KV IIT Chennai

.

81
Oh! Death

Death, oh! Death, thou art the best partner of life
Indispensable and integral like husband and wife
Invisible, imminent and ineluctable your shower
Why do you knock at door before time to scare?

Transient like water bubbles short is life span
All things shall perish that's the Almighty's plan
Man knows you're so full of energy and power
Your might and strength stands like tall tower

Destiny is pre-destined, time so much powerful
Conquers everything on earth making man fool
Nothing remains forever, momentary things are
Be not cruel and rude to make man gape and stare

With caressing smile, soft touch when you navigate
Helpless, powerless man succumbs to his own fate
Mysterious, mystifying are the ways of the world
Weird and queer things occur man cannot guard

You feel proud pilfering, dragging young and old
Don't you know your tinge is frozen like Ice cold?
How dreadfully you make viridescent leaves fall
Before they ripen, decay or wither to make a call

Death, Oh! Death ye know life is valuable and divine
Come when you've to, nobody will dare to whine
Refrain from descending on the surface of the earth
To toil and moil the man who has taken a pious birth

Obligations, commitments many men have to fulfil
If come in advance to create vacuum who can refill

Wait, watch, and keep patience to come another day
Take whom you've to there's nothing about to say

Bending and bowing salutation to your reputation
If heed to this invocation, plea and supplication
Your potency, intensity, enormity and magnitude
Will be hold high in both altitude and attitude

Aruna Kumar Joshi
PGT (English)
K.V. No.1, Sambalpur

82
Spontaneous Verse Dedicated to Corona Warriors

Embroiled, Embrangled, in shackles HE IS
Dilemma, Circumstances hold HIM back
A row of feeble and suffering human
Restrained life confined to machine
HE battles, Squabbles and some how
Tries to ember the losing breath
Predominantly broken yet at the brim of hope
Suppressed emotions want to cry
Innately familiar to colossal wrack
Dubious self wants to fly
Insomnious deprived of shiny sun
Tries to peep life out side
Exhausted due to physical, mental stride
Blossoms in efforts tries to find NEW HIM
Walks around HIS contaminated arena
To conquer the death, revitalising the dreams
Wondering the innumerable lives HE saved
Aware about the unbeatable war
Won't step back, will accomplish the mission
May lose, may fall, revived sturdy Phoenix
Annihilating all hurdles
Piloted by HIS capabilities
HE won't let his anatomical insight go vain
Imbibing boundless determination to serve
Endless expectation of mortal agony
Around HIM feels the pain of anxious clans
Clamors in heart
YES HE WILL HE CAN

Manisha Sharma
TGT (English)
KV AGCR Colony Delhi

83
The Brighter Side of Pandemic

The year 2020 was marked with onset of pandemic,
The dreadful virus made millions of people sick.
Around the world the situation turned alarming,
People had to struggle for every minute thing.

At times, humanity took a back step, due to some people so greedy,
But empathy awakened in those who came out to help the needy.
Traffic, transactions and life came to a standstill,
Staying away from Virus was like scaling uphill.

At the end of every dark tunnel, there is a ray of hope,
Though devastating today, tomorrow would have scope.
Situations have taught us to be strong and to grow.
Optimism paved the way to a golden tomorrow.

Understood the true meaning of social distancing,
Even staying apart, made us come together and sing.
We stopped being mechanical and being so formal,
And learnt navigating through the new normal.

Lock down gave an opportunity to spend quality time with piety,
It gave us memorable moments to cherish with gaiety.
Online teaching-learning made the scope wide,
We marched ahead bridging the digital divide.

Stay Home – Stay Safe, has become the order of the day,
Masking, sanitizing and maintaining appropriate behaviour is the only way.
The environment got cleansed making the virus stay,
In these uncertain times, we started thanking the God for each new day.

D. Vikram Kumar Varma
HM,
K V Steel Plant Sector-1, Ukkunagaram

84
Online School

A new form of teaching,
The changed form of learning.
A deadly coronavirus creates,
The school days more desirous.
A school building without students,
Do not let the study hampers.
Teachers are explorative in virtual teachings,
Students are inquisitive in online meetings.
Teaching on screen is done with dedication,
Understanding on screen is achieved with determination.
Mute the mic, class becomes observational,
Unmute the mic, class becomes conversational.
Sometimes, looking at screen for long,
Othertimes, staring at books for large.
Inspite of all challenges of School-Education,
Teacher-Student uphold all decorum of Nation-Education.
Thankful to Online-Based lessons,
Grateful to Screen-Based sessions,
At the time of Stay-Safe-Home procession.

Shweta
TGT (English)
K.V Aska

85
Myriads Colours of Life

Wonders of a nonchalant world
Floating in the breeze of fantasy world
A mind dotted with colourful dreams
Blessed with the heaven's will
Knows only to play dream at sweet will
Soon the gushy wind dislodge young sapling
The winter set sail in the ship of changing times
Dispels the clouds of ignorance on sane mind
Gloomy mind find false friend in sigh
The unwitting modern disarray life poses harm
The me generation day mindset
Distinct from paperboat day mindset
Life laments for lost innocence
Bruised knees sweaty clothes forbids life
Life forbears for web generation
Lack of language stays in isolation
Intrusion mars interpersonal communication
Noisy neighbour, cacophony becomes obsolete
Nimble infinite strength evades a child
Values erodes the tender mind
Trapped in the labyrinth of illusion
Forge an abberrant action
A fake vision of fantasy
Sand houses renounce child's mind
Fallacy slake inquisitive mind
Closed windows slam ever changing world
Open skies chirpy birds forbid child's world
Is the future that will come?
Let April shower welcome May flower
Let the child first be a child
Always sketch myriad colours of life!!

R. Sujatha
PGT English
K.V No.2 Shivaji Nagar, Bhopal

86
Forest and Development

They clear off the woods,
Burn the jungle,
And drive away the native,
To become homeless
Wild creatures are lost,
In the smoke
They do it all for development.

Fields are now barren,
Small bushes are like scars on the heart,
Scorching sun has killed the shades.
Rivers are dry,
Sands got transported
To the city.
They call it development.

Now children don't know
What a jungle is!
They watch the jungle in the movies
And are miles away from the experiences
As we are getting away from
Life and jungle
And call it development.

Amresh Kumar Singh
TGT English
KV NHPC, Gerukamukh Assam

87
Hope

Laying down under a tree, is it the sun or the leaves I see?
I think, it's the dance of leaves, hosted by the tree.
Birds sing the tune; the wind adds the rhyme.
It's the image of hope, if one sees it all combined.

There is always light, beneath the shadows.
There is always a new day, after a murky night!
There is always hope in every breath, there is always hope in every sight.
Hope is a way to surrender, hope is a way to see.
There are bigger things at play here, for all of us to be.

Let's hope for a better tomorrow and try to forget this sorrow.
Its not wise to ponder over what was, as our time here is borrowed.

Sangita Singh
TGT English
Kendriya Vidyalaya No.1 Trichy

88
Precious But Momentry

All aspire to live together in life
All ignoramus to surprises of life.
Life is lovely gift but solitary
Life is precious but momentary.
Blissfulness and melancholy follow evidently
Both fall in life simultaneously.
Life is priceless gift but solitary
Life is precious but momentary.

Cram knowledge and wisdom in abundance
Live a luxuriate life to its fullness in preference.
Life is matchless gift but solitary
Life is precious but momentary.

Help, uplift and care for all
Everything perishes but good deeds recalled by all.
Life is peerless gift but solitary
Life is precious but momentary.

Explore, educate, enrich and mould
Prospect mechanism with zeal, and bold.
Life is boundless gift but solitary
Life is precious but momentary.

Death is inevitable to all on earth
Surprisingly, human yearn for life on earth.
Life is unconditional gift but solitary
Life is precious but momentary.

Clement Indwar
TGT English
KV Tatanagar

89
Hope !

Maybe it's me…
Maybe it's all of us?
Are we not dying every day?
If yes, then why the fuss?
Just a few days, it will pass…
Do your best to protect,
It's surely not gonna last...
But, what if? What if it doesn't...?
This is beyond our darkest nightmare,
Having the fear of losing your loved ones,
Having no control and nothing to spare.
Remember, we've once again opened the pandora's box;
And unleashed the dreads,
But, hope! Yes, it will always be there.
Hope for a better tomorrow.

Vartika
PRT
KV No.2 Naval Base Kochi

90
The Silence

The silence on the road, craving for the noise of traffic
The silence in the classroom, waiting for the scratches on the table
The silence in the tiny eyes,
sparkling with the home coming of parents with a box of sweets
The silence in the garden, windows, corridors, gates
Even the birds wondered where human beings are caged
The silence in that corner, which silenced the humanity
Inside the house, outside on the edges of bridge
Village, forest, river front or the ruins
Innermost corners of human brain
Enough of silence, enough of pain
Let's pray the fearlessness regained
The faith and trust will soon be sustained
Let the righteousness always win
Let the Righteousness always Win.

Dhwanika Bhatt
PGT English
KV No1, Sector -30 Gandhhinagar

91
Light of Life

Hope, like a shimmering light beckons me
From the vast void outside,
And as I stretch my hand
I can feel a soft soothing touch
That heals all my pain,
The aching heart gets drenched in delight.
Soon the light gets hazier
And I fall like falling into deep slumber,
Everything turns dark and gloomy
And a voice whispers in my ear
"Don't forget to wake up with the light".
Can I wake up, indeed?
Do I have the power to rise?
An evil presage keeps me awake,
Fear fluid runs into my vein.
No, I can't sleep
I can't go into the death hole of darkness
I am afraid of sleeping.
I have to stay awake to see the new dawn,
To feel the light of life,
Let death be dead before I fall asleep
Let there be healthiness, happiness and peace
When I fall asleep.

Sima Rani Das
PGT English
KV Goalpara Assam

92
Math-Magic

A verse of logic and reasoning,
a garland of digits and operators,
My imagination.....
binding endless within bounds !
May it be long distance, high altitude,
any micro measure,
Or, complex creation of nature.
"Mahashunya"—the supreme originator.
Chances- Limits-Estimation
capable of any commercial calculation.
splendid is its expansion, amazing is its presentation.
Beyond explanation, beyond speculation,
Infinite in itself, "Infinity" is the destination.
Spontaneous is its illumination,
a stream of quest and exploration.
Blessings to human race,
life line of every education, the language of land and space.
It is the beginning and also the end--
It is just, a genuine friend—
This is what Mathematics,
Let us unfold all its magic and tricks.

Sarmistha Deb Biswas
TGT Maths
K.V. Silchar

93
Need A Change

At different phases of life time
There were instances to dim or shine
I repressed myself on many occasion
Was it my flaw or mere supposition!

From the core of my heart, a voice intervened
How long you'll be timid and timorous
Get up from your respite and face the mutation
In this vivacious world, esoteric people are on mission

I was startled and I was amazed
In this long sojourn on this earth
Gained myriad of ideas that are worth
I solicited solace and prayed

Guide my path O! God
Help me to be a change
To fathom the gulf and drift the gaze
Beyond the four walls to the virtual phase

Anita Paul
Headmistress
KV Army Area Pune

94
Strange Walk

When I was desperate to have it, I wasn't rewarded
At the times when I lost hope, miracle happened.
Strange walk of my life.

When I starved, cried and pleaded, I was denied
Now, when I overcame the phase, I was awarded.
Strange walk of my life.

When I screamed but my sound wasn't heard
Now even my whispers are heard, I am assured.
Strange walk of my life.

When I wanted to settle
Ups and downs, turbulence, roller coaster ride-my life
Now when I want to wander, explore, I am secured.
Strange walk of my life.

I looked in despair, someone to hold, to listen, to sympathise,
But, Alas! I was left abhorred.
When I stood up on my own, endured, I was insured.
Strange walk of my life.

Swinging between despair and hope, negligence & attention
Dislikes & favouritism, criticism to praise.
I learnt to stand on my own
Strange walk of my life.

Rashmi Jain Bayati
Headmistress
KV No.1 Shahibaug Ahmedabad

95
Loneliness

The Loneliness I feel now is like a deep sea.
It puts salt to all my happiness, feelings, and all my cherishing memories.
Sea of good and bad thoughts surrounds me
Many a times, I came across this term - used and taught too ' loneliness'
Without really knowing it.
But now I could realise what the word, exactly mean
No screams from my kids,
No murmurs from my dear students,
No cosy chat with my friends:
I could hear the bees buzzing from the garden,
but
The fragrance of flowers is aloof from me.
No fragrance, no taste.
Insomnia took over me
Day and night seemed alike
I couldn't patch up with the nausea
The long seventeen days felt like seventeen long years
These dark days taught me "What loneliness is?"
My father too went away from us in the midst....
Then I understood
"What exactly loneliness is"
When I poured his ashes into the sea;
I couldn't hear the swish of the furious waves
Crushed by the paralysing waves of pain,
My heart was beating louder than the tumultuous waves of the sea....

Sini Rani S
PRT
KV Rubber Board Kottayam

96
Education

It is the education,
works like a mother,
begets, brings up and creator
braves us through tough situation.

It is the education,
which is a light post,
taking care of our life boat,
helps us reach our destination.

It is the education,
works like a panacea,
healing us, killing bacteria,
of misinformation and discrimination.

It is the education,
which is like the sun,
warms, raises to our mind,
the vapors of imagination.

It is the education,
which is a weaver bird,
scrounging, fluttering, picks preferred,
helps us build a strong nation.

Deepak Kumar Juneja
PGT English
KV Bojunda Chittorgarh

97
I

I is the drop of water
Coming from the blue of skies,
Having the name of shower
Upto the sea till it flies.

I is the name of flame
Emit the fame of light,
Till last iota it burns and
Succumb to the dark of night.

I is the name of summit
That is based on earth,
Quake of earth can lug it
To end the pride and mirth.

I is the power of might
Given by the trust of illusion,
Amid the girth of the world
'I' is none but limitation.

I is the clone of ego,
Inalienable part of the whole,
Hardly found in time
Until life slips its goal.

Let us urge the Almighty
To avert the I of us
To open the eyes of soul
And make the world joyous.

Basudev Chakraborty
Senior Secretariat Assistant
KVS Regional Office Kolkata

98
A Queue of Questions

As I enter the empty classroom
A few questions towards me, loom
The chalkboard asks me with gloom,
"Where are the curious eyes which looked at us with zoom?"
The chalk piece queries, “Where are those hands which waited for our scribbles?”
The desks implore, “Where are those books and pens which gave us jiggles?
The benches enquire, “Where are those little ones who used to give us giggles?”
The display board questions, “Where are those sketches, poems and riddles?”
The tube lights complain, “It’s been a long time since we have seen our young friends”
The smartboard chips in, “We are desperate to brighten the world of our young friends”
I look into my Google classroom and quip, “Here they are, all online, your e-friends”
They will be back soon, your friends
As soon as the pandemic is out of touch
They also miss you as much
And I let all of them meet on screen
Jovial kids and jolly things, with broad smiles illuminating the screen!

Nithya R Warriar
TGT English
Kendriya Vidyalaya No.2, Naval Base

99
Who is She?

She is a woman
And that's her pride
To have the strength of mind
Whether the path is narrow or wide
She has stood the test of time
And fought against all odds
Never letting her will to bend
Nor her spirit die at any end.
Bruised or broken at times
But never beaten or shaken too long
Bearing the brunt for all wrong
Not just now but has been for so long
Nothing can deter her
In her March to glory
A warrior, a rebel, as a queen
She could prove her mettle and be worthy
She is gentle, loving and caring
But she is also bold, commanding and daring
She can be the mother, sister and daughter
She can also be the leader, soldier and educator
Her beauty can be mesmerising
And her gentleness can be rewarding
But her ability can be amazing
And her achievement can be baffling.
She can sway you with her sweetness
She can also quell you with her sharpness
She is a gentle dove but is a lioness too
So always be alert and aware
And handle her with care
She can be a goddess
And can be an avenging angel too
She is a woman
And so she is
It's her identity and also makes her a mystery.

Geetha.S.Nair
PRT
KV No.2 Naval Base, Kochi

100
Don't Throw Away

May it be mean of no value for you,
May it means nothing for you,
May have its silvery glaze
And occupies no land of your "worthy marbled silky floor"- as you crawl,
Surely, it never hurts you, so
Let it rest stealthily – behind the back door-
Of your "Castle".
Don't ignore its Youth,
Never forget its strength,
Learn from its life – how
It stood by many of your elders and,
Parents of parents.
It squeezed out its full – to protect you all,
When no one was to stand by,
It helped them to stand erect.
When something was beyond your reach, you were a kid
and you toddle-with immature limbs, searching for your scattered toys,
You too remembered to use this neglected refused,
And this lifeless support made it in your hands.
For plucking flowers – at the dawn
From the trees stood far inside the barbed fence,
Made you despair, but
this silent friend, extended its hand,
To make the wished flowers – to their place
In the empty basket of your hand,
Made your heart full of joy…..
…. filling up the basket with endless joy.
So, make me a valued one, grip me firm,

for your coming years, which are sure to come.
To make your bowed back straight- as you lean because of age.
Give me a space – in your wide palace,
For, I'll care your mobility, now grip me tight,
For the counted days of your life.
I'll be your all time friend.
I am the lonely "walking stick", value me- value me,
Don't throw me away.

Alak Bhattacharjee
TGT W.E
K V Kailashahar, Kamrangabari

101
Ecstasy

There is a look of ecstasy on my face
The happiness of my children is the base.
Tiredness ends on seeing a smile
When they laugh for a while.
Some find ecstasy in money and fame
But can't come out of that game.
For some it is adventure and celebration,
Some search it in God's beautiful creation.
Others look ecstasy in admiring and criticising,
But who knows if this is mesmerising?
For rebels it is in always to defy,
We don't know where ecstasy actually lies.
For starving it is to fill his belly
For creatures it is in woods and valley.
Everyone has a different definition
Sometime one or the other is fascination.
Try to search your own ecstasy
Follow it but avoid fantasy.
To be true it is in you
You can search it and pursue.
Search it around and you will find
At later age when you see behind,
Of golden age it will remind
When all of us in death confined.

Rita Attri
TGT English
KV 14 GTC Subathu H.P.

102
Amid Pandemic My Teacher My Hero

One day I woke up to see something strange,
Which was totally out of my mind's range.
Streets empty, roads empty, empty was human cry,
Happy nature, Happy birds, Happy was sky.
For a moment my mind swirled,
Have I come into another world?
Then I saw a police van doing patrol,
Said they, stay in house to take situation under control.
My mother then gave voice backside,
Why are you out? Come soon inside.
She told me in whole country there is lockdown,
Which means no movement of public, everywhere is shut down.
Last night, PM exhorted the country folk,
Stay in their houses from this clock.
He said, Corona has crawled in country,
Show cooperation & patience all and sundry.
Then started my year-long run,
Stay in house with friendless fun
I missed my classmates, teachers and school,
To think of which was nostalgically cool.
Loneliness kills inner self, says psychology,
In this critical time my teacher helped me with technology.
Wonderful experience it was, he started teaching online,
Went away the boredom & came in life new sunshine.
Diligently and amazingly, he taught to impart education,
His efforts are commendable and amount to innovation.
We learnt many good things by use of internet,
All it became possible thanks to our teacher's sweat.
Some students created ruckus during class session,

But he never rebuked, rather gave us good lesson.
For the first time, I realized the hard work of the teacher,
Future of country is made by this industrious creature.
My teacher my pride, a mine of data.
His loving word for us is always Beta.
I will say my teacher is sage,
Who brought me out of ennui cage.

Satish Kumar
PGT English
Kendriya Vidyalaya Baikunthpur SECL

103
Teachers: Pillars of The Nation

Teachers are undoubtedly the pillars of a nation;
Their sole aim is to seek that everyone receives Education.
In contemporary times a teacher is no longer a preacher;
He has donned the role of a friend, guide, philosopher and facilitator.
During teaching he performs innumerable roles;
To enlighten, awaken and educate the young souls.

Like an expert gardener he sows mildly;
Seeds of curiosity slowly but firmly.
Each bud he nurtures with affection and care;
Until it blossoms with new ideas and talents rare;

Shapes their future like an adept potter;
Uses praise and corrective measures till they reach the high order.
Fills vibrant colours in their life with patience;
To make them responsible and patriotic citizens of a nation.

Sometimes the teacher acts like a doting mother;
Using judiciously reward and punishment together.
Scolds, praises and encourages them all;
To rise in life and be prepared to face a fall.
The strong bond of understanding between the teacher and taught;
Existed from times immemorial and will never be lost.

Jayasree Bhattacharyya
PGT English
KV New Cantt. Prayagraj

104
A Wanderer

I want to be a wanderer
Like those ascetics in yellow and orange,
I would like to wander throughout the world In the freedom
of the bird flying in the sky.
My only abode would be this earth And I would tune my soul,
with the joys and sorrows of life,
Its knolls and dells.
I would sing the eternal song of nature The very song that a
stream plays,
as it flows along the rocky path pursuing its destination.
Oh! The very song that a nightingale plays In the woods
blossoming,
In its spring mirth.
I would flower over sorrow
Like a flower that blossoms between the Thorns of cactus.
I would search everywhere And anywhere for the truth,
Supernal and eternal, Wisdom true and free ;
and freedom that takes me to The path of nothingness
through the void towards the divine. I want to be fearless,
As a warrior who is true To the soil of his motherland,
And fight every obstacle and bars In my path,
And light the candle of truth.
I will be a wanderer
Free and without any compulsion, Free to play and shape my
life, Free to wander and search,
Free to laugh and cry.
Yes, I would really be wanderer !!

Sudip Mazumdar
TGT Biology
Kendriya Vidyalaya No 3, Agra

105
Searching A Ray of Hope for Covid-19 Pandemic

A deep dark cloud
has hidden behind the sky,
Ponds and rivers
also have gone dry.
The gloomy cloud
has also shaded the ground,
Everywhere people
are searching for water around.
But nowhere
mankind is on peace,
Everybody is
struggling for normalcy.
Millions of marooned
are moving here and there
For search of
food, money and shelter.
Grave yards are
filled up with number of dead
souls,
With the demise of young son,
laments the old parent and
consoles.
Mankind has
lost its near and dear
Happiness has disappeared
he is no more in cheer.
How long will the war continue
is thinking on constant fear?
It is not a battle between two,
but all the nations are on war.
Mighty muscles have been
demolished even gone powerless,
Stretches the hands
for help at the time of distress.
But the grief mind is still
struggling,
thinking far a ray of hope,
All will settle down once again,
time will minimize the wide gap.
Candles of light
glittering at a distance
Brings the hope
of ray for survival chance.
No doubt mankind
will win over the war
Again will be glorified
whenever it will be the conqueror.
Transition of time
is testing everyone's patience
Paves the path
For building of our confidence.

Ajay Kumar Sahoo
Librarian
Kendriya Vidyalaya Rourkela

106
Wake Up Call

Arise, awake and please listen dear teachers.
Face extraordinary challenges boldly
Build up new strength and vigour.

The whole nation looks upon you
with a lot of expectations.
Time has come to prove your mettle by
showing dynamism and vision.

Please change your attitude and aptitude
Take a sacred vow for dedication.
Our children still cherish you as
ideal and model for inspiration.

Remember, everything is possible under the sun
There may be some obstacles and disruptions
But turn the tables on your side and
be innovative with creative expression.

Adopt Technology blended teaching
soaked with human touch
Revamp curriculum transaction to open new horizon.

Biranchi Narayan Das
Principal
KV Gopalpur Military Station

107
We Are Bound to fall And Rise

In the darkest of the times
somewhere in my mind only these lines rhyme

We are bound to fall and bound to rise
Turbulent winds have struck,
Path to success is obstruct

It's been difficult and painful
Torturous and stressful

It's been dark and scary
The world is full of misery

It may be hard to grow
But easy to throw

Your goal may not be near
Have faith you'll reach it dear

Get up! Don't rest! Begin to walk
Enlighten the spark to make a mark

Get inspired by the phoenix
Who even revives from it's ashes

Don't stop! Don't wait! This night is over
Dawn is waiting at the corner

Humanity is still alive
Pure souls like you always shine

You were bound to fall
Now it's time to rise

Priyanka Chibber
PGT Commerce
K V Harda

108
Where Gods And The Mountains Coexist

I still remember the pleasant temperate forest I passed through
the rain, the snowfall,
the young bushes which under the weight of snow lay prostrate on the forest floor.

I still remember the pilgrims and the enthusiastic trekkers, and those simple ramblers like me.
Indefatigable...
All walking along the steep slope, a perpendicular path,
As if trying to climb a ladder to heaven.

And heaven it was.....!
for myriads of wildflowers greeted me.
The open slopes dazzling with wild strawberries, anemones, and buttercups

Alpine meadows, rhododendron forest, and the cold fresh air.
creating a susurration.
I still remember that I had stopped to listen until it was gone.

The small inns, the wayside tea shops
Sheep hurdled together in a ruined Dharamshala
Time was of no significance here.
How intoxicated I was with the verdant greenery surrounding me.
Between the earth and the sky, nothing at all except the grass, rocks, and tiny flowers.

And then I noticed you Tungnath
Standing alone on a bleak, windswept terrain, open to the skies
A solitary structure.

Your lonely eminence made you so exquisite.
There you stood unspoiled by the materialistic society,
Exerting your magic on all those who came with an open heart and mind.

I still remember the subdued settled despair in my mind as I walked towards you.
And then that feeling of uplift
That sudden exalting cheerfulness,
As I caught a glimpse of you.
I was transported to an abode where the Gods and the mountains coexist.

I came away forest refreshed
a better person.
Wondering whether the world was like this before mankind destroyed it, stripped it bare?

Mousumi De
PGT English
KV AFS Bidar

109
Awake for A Better New World

Come out from there, the dark room, behind the rainbow iron grills
Break down the mighty walls the blind society gifted you
With the might of your ignited mind;
Let the light from your fiery divine soul brighten the world
Let it pierce into the cataract-ridden eyes of the self-assigned rulers
Like a laser from infinity…to show the abysmal chasm of vice they are in for ages
How long, again, will you be in veils?
Till the world becomes barren?
Waste not your life for any parasites to live on you
Raise your power-filled voice for truth and justice
Lift your heads and tireless hands for equal rights of all beings
Come let us rewrite the rules to make a peaceful new world;
Lest you will be the next bud nipped, to adorn their crown.

B.Lekha
TGT English
K.V.No.1 JIPMER Campus Puducherry

110
Dedicated To Doctors

To be a doctor…!!!
It's not so easy as it seems.
Behind is a story long of dreams.
Sleepless nights, restless days
Every new patient, and a new case
Accepting sides both, black and white,
Have I not said it very right?
Bugged with studies very hectic,
And a schedule very terrific,
Hundred visions and revisions
Then you are with conclusions.

Days of blood and blows, sweat, struggle and pain
And finally, you are a super humane.
When a child in pain crying,
And the mother for reason still trying
There you arrive with motherly craving
Leaving your things for a given time.
You have to speak to him alone
For there is no language of a new born
You are blessed with such device
To understand by a look in his eyes.

And by luck that was all not in vain
And smile returns to the little face again.
And they are the smiles very contagious.
Is it not an act courageous?
But few can't which I can see,
The inward beauty of your lively spirit
Seeing a patient in hospital arise
Keener lightning quickens in your eyes
You set the head, and you divide the hair,
By your darling care

About a doctor this is my vision,
Charity, honesty, dare & devotion,
Warmth, respect, love & creation,
Security, sentiments and Attraction
Agitation, worship and solution
For their respect, this is the reason
They are blessed with all these seasons.

When some epidemic broke loose
People ran towards refuse
Amidst blood and death,
Doleful tears and lamenting cries.
You fold your sleeves
To repair the smiles.
Some time you win, sometime you lose
But isn't it the rules of the game
Some may blame you for the Loss
But these "some" don't remember,
that you are not God,
But next to God.

When we arrive on earth, you welcome us,
When we head for heaven, bid farewell to us,
From the cradle to the grave
You are the people who take our care
If we try to learn from times,
Every hospital seems as shrines.
More so to such common eyes
I would like to advice

Give them their, due get them a place
Take you a course, get you a place
Observe their Honour, and their grace.
For, doctors they deserve this state,
Nor would I love at lower rate

Some you may find, really cunning and vice,
But don't they have their own right
To exist in every enterprise
But
Mind my buddy, they are not living,
They are only just existing.

Mine is not a poet's profession,
I had to operate some deadly weapon.
Only you are responsible for this creation,
for you gave me some lovely inspiration.
Doctors,
You are the ones with your devotion
Are the ones who also dare…!

Rakesh Rathee
SSA
KV Dinjan Assam

111
Faith

I kept finding the reason of my existence,
The more I pondered the more I felt reverence,
For the creator of those zillion galaxies;
He alone knows his creations & their fallacies.

For years I feel I lived a hollow life,
With infinite insecurities and personal strife.
My inner goddess at times enthralls,
Over false illusions and corny calls.

I stopped and checked the reason of my anxiety,
I found worthless sentiments and sunken society,
Where I forcefully was toiling hard to sustain;
Proving my worth and feigning in vain.

Realization dawned upon me and I ceased to dwindle,
In-between all the mazes which posed to be riddle,
I felt the incessant presence of the supreme power;
Who gives eternal blessings like a sweet bower.

Your Faith in the Almighty should be your weapon,
To fight the darkness and the unknown,
when Faith is deeply rooted, you don't feel blue;
For one who has created you is always within you.

Jyoti Meena
PGT English
KV Dholchera Assam

112
What is Pressure Cooker

What is in the pressure cooker?
The aroma is good! is it porridge?
And mommy please! Today can we have
Some pasta, coffee and your spicy fritters?

As the lady of the house
Enjoys these cute supplications
She suddenly remembers, "Oh I forgot!"
I have to draft two mails, talk to clients
Host a meeting and share five folders.

She speeds up her car to the market
Wearing a smile, her beautiful tiredness.
After all ! she has to buy groceries, greens
Stationery and medicines for fever, diabetes and blood pressure.

Now I need to look homely and dutiful
Now classy and equally bossy
Ever presentable, equally approachable
Breaking stereotypes and still exhibiting, all socially desirable demeanours.

"Guests are to visit, they would prefer home cooked food
And yes! room decor also calls for a makeover."
"Ah yes mommy ! my exams are approaching
Please help me as without you, I always get the jitters".

I wonder sometimes how amazing! how wonderful!
How many roles do women perform together
They may be an astronaut, a columnist, a seamstress, teacher or youtuber
But besides these, they are always fantastic home maker and relationship manager

Women are no more restricted to pressure cooker.
They are slowly conquering all social pressures
I know you would question me, what about molestation, exploitation
Women empowerment, Jaya the picture is not that fairer.

I tell you, it is not that bleak and grim either.
Let us rejoice in her achievements and motivate her
Well, the debate on women empowerment and my poem
Shall go on for ever and ever and ever.

Jaya Sharma
PGT English
KV Cantt Kanpur

113
Nectar of Thy Divine Love

The tip toes of my little feet
The endless fears, doubts and worries,
Everything melts away with thy loving touch,
Your kind gaze, your sweet voice.

Thou feed me with thy love divine,
Thou nurtured my soul and anoint it
Thou presence lifts my courage bountiful
Face the world's cares.

Was that thou who lifts me up?
When I stumble upon the thorns of life,
Bruised and startled,
Panic and worried.

Thou came as a breeze gentle and soft
Soothes my senses and balms my emotions
Held me closely and hugged me tight
Whenever I aimlessly search
And groping in the thick darkness.

Then you left me in the middle of all that
I wasn't strong enough to handle that
Swayed by the gusty waves
Uprooted by the heavy winds
Things are difficult, pleading for help.

Being taught embrace this enchanting life
I search and search for my lost Haven
The calm bosom of my only world
Couldn't find it here and there
Then came the light

At the end of the tunnel
Calling me to the safest place.

Is this the way to my destination?
Doubted and stared
Yes, it's the light, that you searched for long
Once again I experience the balming love
The kind gaze and the soothing touch
"It's me dear one" says the light,
"I have been waiting for you to realize."

It's formless and unconditional
Never- ending fountain
The nectar gushes out and about
To calm my soul and relieve the pain
The assurance comes as a waft -
Reaches you soon, sound and safe.

Manifest thy presence and embrace thy peace
Drink thy nectar and quench my thirst
Taking refuge and surrender myself
Prostrate at thy Blue lotus feet.

Nancy Chandran
PGT English
Kendriya Vidyalaya, Pasighat

114
Dawn At The Door

Why to worry? Why to hesitate ?
Do your best and crave for more
Everything will be alright
DAWN IS AT THE DOOR!

The green fields with tiny tots,
Schools with bubbling shouts
Jumping, running, shouting children and more,
DAWN IS AT THE DOOR!

May it be the dark days,
May it be the quite days,
Who cares, as light comes after every dark phase it's sure
So wait, DAWN IS AT THE DOOR!

Learning from heaviest days,
from our pains and aches
this is how life teaches you to grasp the skills
and embrace the shore,
Yes cause, DAWN IS AT THE DOOR!

Remember every coin has two sides
Every aspiration has to ride
Get Up, and dream aspire for more,
As it true, DAWN IS AT THE DOOR!
Look at the horizon, DAWN IS AT THE DOOR!!

Juhi Chakraborty
TGT Biology
KV Bilaspur

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली

Kendriya Vidyalaya Sangathan, New Delhi

18, संस्थागत क्षेत्र, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली–110016
18, Institutional Area, Shaheed Jeet Singh Marg, New Delhi-110016
https://kvsangathan.nic.in

@KVSHQ @KVS_HQ @kvshqr